

75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव



मेट्रो चेतना

अंक-31



मेट्रो रेलवे, कोलकाता

मेट्रो चेतना

अंक-31

संरक्षक

पी. उदय कुमार रेड्डी

परामर्शदाता

सतीश कुमार

मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
प्रधान मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर

संपादक

किरण बोस
राजभाषा अधिकारी

सहयोग

कीर्ति किरण बागे, व. अनुवाद अधिकारी
राजेश एक्का, व. अनुवाद अधिकारी
शांतनु नाथ
कनिष्ठ अनुवादक
मानसिंह मेलगंडी, नि.स.-॥

सम्पर्क

राजभाषा अनुभाग
मेट्रो रेलवे
मेट्रो रेल भवन (नवम तल)
33/1, जवाहर लाल नेहरू रोड
कोलकाता - 700 071
(020) 55735, 55037 (रेलवे)
(033) 225 55735, 225 55037 (पी. एंड टी.)
ई-मेल- rajbhashametro@gmail.com

केवल निःशुल्क वितरण हेतु प्रकाशित पत्रिका। इसमें प्रकाशित
रचनाओं में व्यक्ति विचार लेखक/रचनाकारों के अपने हैं।
संपादक मंडल इसके लिए जिम्मेवार नहीं है

अनुक्रमणिका

➤ संरक्षक की लेखनी से	1
➤ मुख्य राजभाषा अधिकारी का संदेश	2
➤ सम्पादकीय	2
➤ मेट्रो समाचार	3-4, 33-35
➤ मधु-मालती के फूल	5-7
➤ दो किसान	8-9
➤ तनावमुक्त जीवन के मूलमंत्र	10-11
➤ मेट्रो रेल, कोलकाता – एक नजर	12-13
➤ विरासत से	14-17
➤ कुछ तुम्हारी कुछ मेरी बात	17
➤ ये उन दिनों की बात है	18-20
➤ लोकल ट्रेन एवं उसके नित्य यात्री	21-22
➤ तमिलनाडु जल्लिकट्टू का त्यौहार	23-24
➤ प्रकृति का महापर्व सरहुल	25-26
➤ डूआर्स	27
➤ हमारे जीवन में संगीत	28
➤ निःस्वार्थ मां	29-30
➤ ज्योतिषी जाल	31-32
➤ हिन्दी के हस्ताक्षर	36
➤ नन्हीं कूची	37



आवरण पृष्ठ

दिनांक 12.04.2023 को विशाल हुगली
नदी के तल से 32 मीटर नीचे निर्मित
सुरंग से गुजरती पहली मेट्रो ट्रेन

पी.उदय कुमार रेड्डी
महाप्रबंधक



महाप्रबंधक कार्यालय
मेट्रो रेल भवन,
33/1, ज.ला.नेहरू रोड
कोलकाता-700071

संरक्षक की लेखनी से..



मुझे प्रसन्नता है कि मेट्रो रेलवे राजभाषा विभाग, हिन्दी पत्रिका "मेट्रो चेतना" के 31वें अंक का प्रकाशन कर रहा है। मेट्रो रेल कार्यालय 'ग' क्षेत्र में होने के बावजूद, राजभाषा विभाग की ओर से इस पत्रिका का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है।

राजभाषा हिंदी एक सहज-सरल भाषा है। यह जैसे बोली जाती है वैसे ही लिखी भी जाती है। इस वजह से राजभाषा में काम करना आसान हो जाता है।

पत्रिका प्रकाशन का मूल भाव व उद्देश्य यह है कि राजभाषा हिंदी के प्रयोग में विस्तार हो। सरकारी कर्मचारी होने के नाते हम सब राजभाषा के प्रयोग में अपनी-अपनी भूमिका पूरी इमानदारी से निभाएं। मेरा आप सब से अह्वान है कि आप अपने-अपने कार्य क्षेत्र में पूरी निष्ठा से राजभाषा का प्रयोग करें।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए राजभाषा की पूरी टीम को बधाई।

शुभकामनाओं सहित,

(पी. उदय कुमार रेड्डी)

मुख्य राजभाषा अधिकारी का संदेश



मेट्रो रेलवे की गृह पत्रिका मेट्रो चेतना का 31वां अंक आप लोगों के समक्ष प्रस्तुत है।

संगठन के अधिकारी/कर्मचारी अपनी भावनाओं एवं विचारों की अभिव्यक्ति राजभाषा हिंदी के माध्यम से कर रहे हैं जिससे उनके इस भाषा के प्रति स्नेह का प्रमाण स्वतः दृष्टिगोचर होता है। राजभाषा की प्रगति, प्रचार-प्रसार अधिकाधिक होता चला जाए इसके लिए हमें राजभाषा में कार्य करना जारी रखना होगा। यह हमारा कर्तव्य ही नहीं बल्कि यह हमारी संवैधानिक जिम्मेदारी भी है।

मेरा अपने लेखकों से अनुरोध है कि वे सतत एवं निर्बाध लेखन करते रहें और राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अपनी भागीदारी का परिचय देते रहें। इससे आपकी पत्रिका को और अधिक ज्ञानवर्द्धक एवं मनोरंजक बनाया जा सकता है।

हमेशा की तरह आपके अमूल्य सुझावों का स्वागत रहेगा ताकि आगामी अंकों में पत्रिका नूतन कलेवर के साथ आपके समक्ष प्रस्तुत की जा सके।

उम्मीद है कि आपको यह अंक पसंद आएगा।

धन्यवाद!

सतीश

(सतीश कुमार)
मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

एक लम्बे अंतराल के बाद मेट्रो चेतना अपने चिर परिचित स्वरूप में आपके समक्ष पुनः उपस्थित है। इस अंक के प्रमुख स्तंभ 'विरासत से' में प्रस्तुत है: महीप सिंह की कहानी 'पानी और पुल'। विभाजन की त्रासदी पर आधारित यह रचना हमारे रिश्ते नातों और जज़्बातों की जीती-जागती मिसाल है।



फागुनी बयार और होली की ठंडाई का खुमार अभी पूरी तरह प्रकृति में जज्ब हो, इससे पहले ही चैत्र व बैशाख मास की भीषण गर्मी से प्राणी – पशु – पक्षी बेहाल हो रहे हैं। ऐसे में 'डुआर्स' के भ्रमण का आलेख पाठकों की रुचि को ध्यान रखते हुए प्रस्तुत किया गया है। 'लोकल ट्रेन में यात्रा' एक और रोचक आलेख है। 'ये उन दिनों की बात है' – आपको 70 के दशक के जीवन के ताने-बाने और बचपन की, मोबाइल फोन के आगमन के पहले की दुनिया की सैर कराएगा। यू ट्यूब पर ख्याति प्राप्त लेखिका श्रीमती रूपा भट्टाचार्य की मानव जीवन की अनुभूतियों से सराबोर रचना 'मधुमालती के फूल' आपके हृदय में एक अलग सा एहसास जगाएगी। इसके अलावा मेट्रो रेलवे की ताजातरीन खबरें और राजभाषा कार्यक्रमों की झलकियां और साथ ही बच्चों का कोना जैसे स्थायी स्तंभ भी होंगे। आशा है आपको यह अंक पसंद आएगा।

सूरदास की जयंती पर विशेष सूरदास के कृष्ण भक्ति पद पढ़ना न भूलिएगा।

आपके पत्रों और सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी। रचनाएं, यदि पसंद आती है, तो हमें अपने पत्रों के माध्यम से अवश्य अवगत कराएं।

शुभकामना सह ।

किरण

(किरण बोस)



स्वागतम

श्री पी. उदय कुमार रेड्डी

श्री पी. उदय कुमार रेड्डी ने दिनांक 17.03.2023 को मेट्रो रेलवे, कोलकाता के महाप्रबंधक का पदभार ग्रहण कर लिया है। श्री रेड्डी भारतीय रेल यांत्रिक इंजीनियरी सेवा (IRSME) के 1986 बैच के अधिकारी हैं। इस कार्यभार से पहले उन्होंने अपर महाप्रबंधक, दक्षिण मध्य रेलवे, सिकंदराबाद के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की हैं। श्री रेड्डी जमालपुर से 1983 में स्पेशल क्लास रेलवे अप्रेंटिस बैच अधिकारी के रूप में भारतीय रेलवे में शामिल हुए।

पूर्व रेलवे, आईसीएफ/चेन्नई, दक्षिण मध्य रेलवे और दक्षिण रेलवे में विभिन्न पदों पर काम करने का उनके पास समृद्ध कार्य अनुभव है। उन्होंने विगत में अध्यक्ष, आरआरबी/सिकंदराबाद और आरआरबी/बैंगलोर, सीएओ/आईसीएफ/चेन्नई, सीडब्ल्यूई/दक्षिण रेलवे, मंडल रेल प्रबंधक, दक्षिण रेलवे/तिरुचिरापल्ली मंडल के महत्वपूर्ण पदों को सुशोभित किया है।



उन्हें भारत और विदेशों में नेतृत्व और सामरिक प्रबंधन पर विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने का व्यापक अनुभव प्राप्त है।



दिनांक 30.12.2022 को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा जोका-तारातला (पर्पल) लाइन पर वाणिज्यिक सेवा का वर्चुअल रूप से उदघाटन किया गया। इस अवसर पर माननीय रेलमंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने जोका से तारातला तक मेट्रो की सवारी की।



अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव में मेट्रो रेलवे, कोलकाता को प्रेरणा पुरस्कार



रेलवे बोर्ड द्वारा दिनांक 11.03.2023 से 14.03.2023 तक रेल डिब्बा कारखाना, कपूरथला में आयोजित 'अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव' में मेट्रो रेलवे, कोलकाता के नाटक दल को प्रेरणा पुरस्कार प्राप्त हुआ। मेट्रो रेलवे, कोलकाता की ओर से 'दयाशंकर की डायरी' एकांकी नाटक का मंचन किया गया जिसे दर्शकों द्वारा काफी सराहा गया। नाटक के निर्देशक श्री देवप्रकाश बनर्जी, ईएमओ और एकल कलाकार श्री अभीक दास, कार्यालय अधीक्षक, कार्मिक शाखा के कर्मी हैं।

प्रधान मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर सह मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री सतीश कुमार ने बेहतरीन प्रदर्शन द्वारा मेट्रो रेलवे का गौरव बढ़ाने के लिए नाटक दल के सभी सदस्यों को बधाई दी।

सदस्य, अवसरचना श्री रूप न.सुंकेर का पूर्व-पश्चिम मेट्रो के हावड़ा मैदान से सियालदह विस्तारखंड का निरीक्षण



श्री रूप.न.सुंकेर, सदस्य अवसरचना, रेलवे बोर्ड ने 16.04.2023 को पूर्व – पश्चिम मेट्रो के हावड़ा मैदान से सियालदह तक के विस्तारखंड का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान अपर महाप्रबंधक एवं प्रधान मुख्य इंजीनियर श्री एच.एन. जायसवाल और प्रबंध निदेशक, कोलकाता मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (केएमआरसीएल) तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे।

श्री सुंकेर ने इस विस्तारखंड के विभिन्न स्टेशनों पर उपलब्ध कराए जानेवाले यात्री सुविधाओं जैसे लिफ्ट, स्वचालित सीढ़ी, टिकट



काउंटर, सुरंग संवातन प्रणाली, स्टेशन शीतलन व्यवस्था आदि का जायजा लिया। उन्होंने हावड़ा मैदान से हुगली नदी के नीचे सुरंग से गुजरते हुए एस्प्लानेड मेट्रो स्टेशन तक ट्रॉली निरीक्षण भी किया। उन्होंने हावड़ा मेट्रो स्टेशन का निरीक्षण करते हुए स्टेशन के विभिन्न तकनीकी मापदंडों की जानकारी ली और वहां प्रदान की जाने वाली यात्री सुविधाओं का जायजा लिया।

मेट्रो रेलकर्मि श्री सायंतन दास बने भारत के 81वें ग्रैंडमास्टर

मेट्रो रेलवे के कार्मिक विभाग में कार्यरत श्री सायंतन दास भारत के 81वें ग्रैंडमास्टर बन गए हैं। उन्होंने फ्रांस में कान्स ओपन-2023 का खिताब अपने नाम कर पश्चिम बंगाल के 11वें ग्रैंडमास्टर बनने का गौरव भी हासिल किया। कान्स में 20 से 26 फरवरी तक आयोजित इस टूर्नामेंट में 12 ग्रैंडमास्टर ने हिस्सा लिया। श्री सायंतन ने 2624 एलो पॉइंट के साथ इस टूर्नामेंट में भाग लेने वाले शीर्षस्थ श्रेणी (रेटेड) के खिलाड़ी रूसी ग्रैंडमास्टर अलेक्जेंडर मोतीलेव को अंतिम दौर में हराकर खिताब अपने नाम कर लिया।

महाप्रबंधक श्री पी.उदय कुमार रेड्डी ने 04.05.2023 को अपने चैंबर में उनसे मुलाकात करते हुए इस शानदार उपलब्धि के लिए उन्हें बधाई और शुभकामनाएं दी



भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर की 132वीं जयंती का आयोजन

14 अप्रैल, 2023 मेट्रो रेल भवन में भारत रत्न डॉ. बी. आर.



अंबेडकर की 132वीं जयंती श्रद्धापूर्वक मनाई गई। श्री पी. उदय कुमार रेड्डी, महाप्रबंधक, मेट्रो रेलवे, कोलकाता ने प्रकंड विद्वान और भारत के संविधान निर्माता डॉ. बी. आर. अंबेडकर के

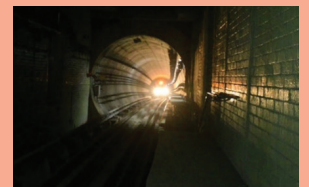
चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की। अखिल भारतीय अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति रेलवे कर्मचारी संघ, मान्यता प्राप्त यूनियनों और अन्य कर्मचारियों के प्रतिनिधियों ने भी इस अवसर पर बाबासाहेब को पुष्पांजलि अर्पित की।

हुगली नदी तल के नीचे से गुजरी पहली मेट्रो रेल

कोलकाता मेट्रो के लिए 12.04.2023 का दिन एक ऐतिहासिक दिन रहा जब एक लंबे इंतजार के बाद देश की पहली मेट्रो हुगली नदी के नीचे से होकर दौड़ी।



श्री पी. उदय कुमार रेड्डी, महाप्रबंधक, मेट्रो रेलवे भी इस ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बने, जब मेट्रो रेल संख्या MR-612 ने महाकरण स्टेशन से हावड़ा मैदान स्टेशन तक की यात्रा पूरी की। नदी के जलस्तर से 32 मीटर नीचे निर्मित इस सुरंग खंड पर शीघ्र ही वाणिज्यिक सेवा आरंभ होने की उम्मीद है।



मधु-मालती के फूल

सावन मास की सुबह थी, बादल बरस कर छंट चुके थे, निकली चटक धूप से आकाश चमक रहा था। सड़क पर गाड़ियों का काफिला निरंतर अपने गंतव्य की ओर बढ़ रहा था।

कहां मेरे उस छोटे-से शहर की सुबह और कहां इस महानगर की आपाधापी। मैं जो चाहती थी, हो तो रहा था, फिर मन काहे पिघल रहा है। शुरू-शुरू में मैं यहां आकर बहुत उत्साहित थी क्योंकि मुझे महानगर में कभी रहने का मौका नहीं मिला था। हम अपने सारे सामान लेकर एक बहुमंजिला अपार्टमेंट में शिफ्ट हो गये। कुछ दिन तो घर के सामान सजाने-संवारने में निकल गये।

मैं यहां की चकाचौंध से हतप्रभ थी। जिधर देखो गगनचुंबी इमारतें, चमचमाती भागती हुई गाड़ियां, फुटपाथ पर दौड़ते-भागते लोग, चारों ओर भागम-भाग। भीड़, शोर, कोलाहल, इस सब से कुछ ही दिनों में मैं उकता सी गई। रह-रह कर पुरानी जगह याद आती, जहां सब्जी वाली सब्जी देने आती और कुछ अपना दुखड़ा सुना कर मन का बोझ हल्का करती, दूध वाला गाय के साथ बछड़ा भी ले आता, सुबह बछड़े के गले में बंधी घंटी के टुन-टुन से मेरी नींद खुल जाती। मेरी पड़ोसन सुधा प्रायः दोपहर को चीनी लेने आ जाती और 'जरूर लौटा दूँगी' कहकर उधार ले जाती जिसे वह कभी नहीं लौटाती थी। इन सब की मुझे आदत पड़ चुकी थी। यहां तो अपार्टमेंट में कौन कहां रहता है कुछ पता ही नहीं चलता।

एक दिन सुबह-सुबह मैं कुछ खोई-सी बालकनी में खड़ी थी। अनायास ही मेरी नजर हमारे मुख्य द्वार पर पड़ी। बहुत ही खूबसूरत और दिलकश नजारा था। लाल, गुलाबी छोटे-छोटे पुष्पों से लदी हुई मधु-मालती की लतायें

लहरा रही थीं, मानो कई अल्हड़ नवयौवना आपस में हंसी-ठिठोली कर रही हों।

रितेश मेरे पीछे आकर खड़े हो गये और गले में बांधें डालते हुए पूछा – क्या देख रही हो?

मैंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया – उधर देखो, मधु-मालती कैसे लहरा रही है रितेश सड़क पर जाती हुई दो युवतियों की ओर देखने लगे। मैंने झल्लाकर कहा – उन्हें क्यों घूर रहे हो?

रितेश झेंप गये। सकपकाते हुए पूछा – क्या वे दोनों 'मधु' और 'मालती' नहीं हैं! मैंने जल-भुन कर कहा – मैंने नीचे गेट के पास मधु-मालती के फूलों को देखने के लिए कहा था।

ओह सॉरी, कहते हुए रितेश अंदर चले गये।

पूछा, क्या यहां तुम्हारा मन नहीं लग रहा है?

मैंने कुछ चिड़चिड़ाते हुए कहा – क्या करूँ? दिन भर न कोई सखी-सहेली, न कहीं आना-जाना, मैं तो बिलकुल बोर हो जाती हूँ।

सुनो, तुम रोज सुबह पार्क चली जाया करो। ऐसे भी तुम्हारा वजन, बी.पी. सब बढ़ा हुआ है, डॉक्टर ने रोज टहलने को कहा है, पार्क में जाकर मन भी बहल जाएगा। कहकर रितेश नहाने चले गये। मुझे

लगा रितेश ठीक ही कह रहे हैं।

हमारे अपार्टमेंट से कुछ ही दूरी पर एक खूबसूरत पार्क है, ऐसा मैंने सुना था। सुबह घड़ी के अलार्म से नींद खुली मगर बिस्तर छोड़कर उठने का मन नहीं था। रितेश ने जबरदस्ती उठाया तो मैंने कहा – क्या तुम मेरे साथ नहीं चलोगे?



देखो, अपना काम खुद करो, किसी के साथ का इन्तजार मत करो। जाते समय मुझे मत जगाना, बाहर से दरवाजा बंद कर चली जाना।

मैं तैयार होकर पार्क जा पहुँची। बहुत ही खूबसूरत पार्क था। हरी-भरी मखमली घास, करीने से सजाये गये गमलों में रंग-बिरंगे फूल, एक छोटा-सा सरोवर और सरोवर के चारों ओर ढेर सारे नारियल के पेड़। ठंडी हवाओं का झोंका मेरे चेहरे को चूमती हुई बह रही थी। कुछ लोग टहल रहे थे। मैं कुछ दूर चलकर ही थक गई और एक बेंच पर जाकर बैठ गई।

हाथों में हाथ डाले उन जोड़ों को निहारती रही जो एक-दूसरे में खोए सरोवर के किनारे बैठे थे। सोच रही

अच्छा...। आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई – मैंने मुस्कुराते हुए कहा।

‘तुम मुझे मिसेज थापर कह सकती हो’ कहकर वह हंस पड़ी। उनके सफेद मोती जैसे दांत और गुलाबी गालों को मैं देखती रह गई।

मेरे चेहरे पर मत जाओ, मैं पचास से ऊपर हूँ। मगर आप तो पैंतीस साल से ज्यादा नहीं लगतीं, मैंने आश्चर्य से कहा। वह हंसते हुए बोली – मेरे साथ तेजी से चलो, ऐसे बैठने से नहीं चलेगा।

मैं उठ कर उनके साथ चलने लगी। मैंने देखा वह मुझसे दुगुनी तेजी से दौड़ते हुए आगे बढ़ गई। हम लोग



थी – अगर एक कप गर्म चाय मिल जाती तो यहां बैठे-बैठे पी लेती। तभी एक महिला मेरे बगल में आकर बैठ गई। मध्यम उम्र की बहुत ही खूबसूरत महिला थी। मुस्कुराते हुए उसने कहा ‘कामिनी, तुम्हारा टहलना हो गया?’

अरे। आप मुझे कैसे जानती हैं?

वह हंसकर बोली – मैं भी राधिका अपार्टमेंट में रहती हूँ, दसवीं मंजिल पर।

तुम तो यहां नयी आयी हो, मैं यहां बीस साल से रहती हूँ। तुम्हें मैंने अनेकों बार बालकनी में खड़े देखा है। नीचे गेट के पास गार्ड ने बताया तुम लोग नये शिफ्ट हुए हो।

साथ ही लौटे। उन्होंने कहा, रोज आना, धीरे-धीरे दौड़ने लगोगी।

गेट के पास आकर मधु-मालती की खुशबू मेरी सांसों में अंदर तक समा गई। मिसेज थापर बोलीं – पता है, दस साल पहले इन बेलों को मैंने ही लगाया था।

कुछ दिन ऐसे ही बीत गये। मैं उनके साथ काफी घुल-मिल गई थी। वह अपने बारे में कभी कुछ नहीं बताती थीं। एक दिन मैंने ही उनसे पूछा – मिसेज थापर, आपके परिवार में कौन-कौन हैं?

सुनकर उनके चेहरे का रंग उड़ गया, बिल्कुल उदास

होकर बोली, अकेले रहती हूँ। सबने मुझे छोड़ दिया, पति पहले ही चल बसे थे और बेटा विदेश में जाकर बस गया है। बेटा कंप्यूटर इंजीनियर है। विदेश में शादी कर अपना घर वहीं बसा लिया है। एक ही सांस में सारी बातें कहकर वे चुप हो गईं।

आपका बेटा आपको अकेला छोड़कर चला गया, आपने रोका नहीं?

क्यों रोकती? उसकी तरक्की में मैं क्यों बाधा बनती?

उसने आपको वहां बुलाया? - मैंने पूछा।

हां, इस घर को बेचकर वहां रहने के लिए बुलाया था। मैंने मना कर दिया, इस उम्र में अपनी मिट्टी छोड़कर मैं विदेश रहने नहीं जा सकती। कहते हुए मिसेज थापर अपने घर की ओर जाने लगीं।

मैं दिनभर मिसेज थापर के बारे में सोचती रही। शाम को मैंने सोचा उनके फ्लैट में जाकर उनसे कुछ गप-शप करूँ। मैं लिफ्ट से दसवीं मंजिल पर गई। देखा - रमेश थापर गीता थापर का नेम प्लेट लगा हुआ है और दरवाजे पर एक बड़ा सा ताला लटक रहा है। कहां गई होंगी? सोचते हुए मैं नीचे गेट के पास चली आई। देखा धनु फूलों में पानी डाल रहा था। मैंने उससे पूछा - क्या तुम्हें पता है मिसेज थापर कहां गई हैं? क्या तुम्हें कुछ बोल कर गई हैं?

धनु कुछ अजीब सी नजरों से मुझे देखने लगा ...। मैंने झल्लाकर कहा - अरे वो दसवीं मंजिल वाली।

वह आपको कहां से मिलेंगी? वह तो पिछले साल

चल बसीं।

मैंने जोर से चिल्लाकर कहा - क्या? तुम पागल हो गये हो? वह मेरे साथ रोज सुबह पार्क में सैर करती हैं - कहकर धम्म से मैं धनु की कुर्सी पर बैठ गई।

मेम साहब, लगता है आपकी तबियत ठीक नहीं है। वह मेरे सामने खत्म हुई थीं। बहुत ही दर्दनाक मौत था। बहुत बीमार रहती थीं, बेटे का आसरा देखती रहीं पर वह न आया। बहुत ही संगदिल बेटा है। एक आया थी, वही खाना पकाती थी। आया कुछ दिनों के लिए गांव गयी थी, जब लौटी तब दरवाजा नहीं खुला। पुलिस बुलाकर दरवाजा तोड़ा गया, अंदर गीता मेम साहब की सड़ी-गली लाश पड़ी थी। बहुत ही वीभत्स दृश्य था। तब से फ्लैट में ताला बंद है ...।

आगे मुझे कुछ सुनाई नहीं दिया, सर चकराने लगा, मैं कुर्सी से नीचे गिर गई। होश आया तो खुद को अपने बिस्तर पर पाया। रितेश मेरे सामने डॉक्टर के साथ खड़े थे। उसने पूछा, तुम ठीक हो न? तुम्हारा बी.पी. बढ़ा हुआ है, डॉक्टर साहब ने दवा दी है, खा कर आराम करो।

सारी बातें जानकर अगली सुबह रितेश मेरे साथ पार्क पहुँचा। हमने सारा पार्क छान मारा, मिसेज थापर का कहीं नामो-निशान नहीं था। अचानक मेरी नजर उस बेंच पर पड़ी जहां हम लोग बैठते थे। बेंच के नीचे हरी घास पर एक मधु-मालती का ताजा फूल पड़ा हुआ था। मैंने जोर से चिल्लाकर कहा - रितेश उधर देखो, मधु-मालती का ताजा फूल। रितेश भी अवाक थे। मैंने पूछा - अब क्या कहते हो?

अगली सुबह बिना अलार्म के मैं उठकर पार्क गयी। उस दिन पहली बार मैं पार्क में दौड़ी थी। लौटते समय मेरी नजर लहराते हुए मधु-मालती के फूलों पर पड़ी। ऐसा लगा मानो मिसेज थापर मुस्कुराती हुई कह रही हों - 'वेल डन...।'

- रूपा भट्टाचार्या

दो किसान

मेरे गांव में बहादुर नाम के एक किसान थे। हम उन्हें बहादुर चाचा कहकर संबोधित करते थे। खेती के नाम पर उनके पास लगभग एक एकड़ जमीन थी। उस समय बैलों से हल जोतने का प्रचलन था। ट्रैक्टर से खेतों की जुताई का प्रचलन नहीं के बराबर था। बड़े-बड़े काश्तकार, जिनके पास कई एकड़ जमीन होती, अपना ट्रैक्टर रखते थे। वह भी लोन पर खरीदकर। यंत्रों का प्रचलन बढ़ाने के लिए सरकार की ओर से किसानों को यंत्र खरीदने के लिए बैंक लोन की सुविधा के साथ-साथ सब्सिडी का भी प्रावधान रखा गया था। फिर भी छोटे किसान बैंक लोन लेकर यंत्र नहीं खरीदते थे। उन्हें डर लगता था कि यदि



किश्त नहीं दे पाया तो बैंक वाले आकर उनके सामान भी ले जाएंगे और गिरफ्तार भी कर लेंगे।

बहादुर चाचा के पास हल जोतने के लिए एक ही बैल था। अब एक बैल से हल जोतना संभव नहीं था। उस समय का प्रचलन था कि यदि दो लोगों के पास एक-एक बैल हों तो दोनों मिलाकर बैलों का जोड़ा बनाते थे और

बारी-बारी से एक-एक दिन अपने-अपने खेत जोतते थे। घंटों का भी प्रतिबंध था। यदि कोई किसी दिन एक-दो घंटे ज्यादा देर तक हल जोतता रहता तो दूसरा उसके खेत पर जा पहुँचता और अपने बैल खोल कर ले आता। इससे खेतों की सही समय पर जुताई-बुआई में बाधा उत्पन्न हो जाती। एक और छोटे किसान जगदीश चाचा के पास भी एक ही बैल था। वैसे उनके पास बहादुर चाचा की अपेक्षा ज्यादा जमीन थी। दोनों ने आपस में ताल-मेल बिठा रखा था। हर वर्ष ये दोनों आपस में सामंजस्य बनाकर अपनी खेती-गृहस्थी का काम चला लेते थे। सामंजस्य का मतलब हुआ कि जगदीश चाचा को थोड़े ज्यादा दिन तक बहादुर चाचा से बैल लेने की आवश्यकता पड़ती थी। वैसी स्थिति में जगदीश चाचा ही दो दिन अपने खेत और एक दिन बहादुर चाचा का खेत जोतते थे। या फिर बहादुर चाचा के बैल को अतिरिक्त दिनों तक जोतने की मजदूरी दे देते थे।

मैं जब बारह-तेरह वर्ष की उम्र का था तभी से ही खेतों की देख-रेख करनी प्रारंभ कर दी थी। वैसे तो मेरे सारे खेत बंटाई में दिये हुए थे पर फसल की उपज के समय खेत-खलिहान से अनाज घर आने तक दीनी-दमाही के समय मेरे घर से किसी-न-किसी को वहां उपस्थित रहना पड़ता था। बंटाईदारों से प्रायः नयी-नयी बातों पर चर्चा होती रहती थी। इसी क्रम में मुझे बहादुर चाचा और जगदीश चाचा के इन क्रिया-कलापों की विस्तृत जानकारी प्राप्त हो गई थी।

बहादुर चाचा के दो पुत्र, राम प्रसाद और लखन प्रसाद थे। राम प्रसाद को वे रामू और लखन प्रसाद को लक्खू कह कर पुकारते थे। उन्होंने दोनों बेटों की पढ़ाई-लिखाई में कोई कमी नहीं की। यहां तक कि खेतों में दो-चार घंटे तक काम नहीं करने दिया। उनका पूरा प्रयास रहा

कि उनके दोनों बेटे पढ़-लिख कर अच्छी नौकरी करें ताकि उनकी गरीबी दूर हो जाए। बेटों ने भी उन्हें निराश नहीं किया। दोनों भाईयों ने बड़ी लगन से पढ़ाई की और प्रत्येक कक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करते रहे। बोर्ड की परीक्षा में भी वे प्रथम श्रेणी से ही उत्तीर्ण हुए। रामू ने 81



प्रतिशत अंक प्राप्त किया था। दो साल बाद लक्खू ने भी बोर्ड की परीक्षा दी और 87 प्रतिशत अंक प्राप्त किया था। धीरे-धीरे उन्होंने उच्च श्रेणी की पढ़ाई पूरी कर ली। रामू ने सरकारी नौकरी प्राप्त कर ली थी और लक्खू एक मल्टी नेशनल कंपनी में अच्छे पद प्राप्त कर लिया था। अब दोनों भाई बहादुर चाचा पर किसानों का काम छोड़ने के लिए जोर देने लगे पर बहादुर चाचा इरादा के बड़े पक्के थे। उन्होंने अपना पुराना काम जारी रखा। उनका कहना था कि जिस किसानों से मैंने दो बेटों को पढ़ा-लिखा कर इस ऊँचाई पर पहुँचा दिया कि आज वे हम दोनों को बड़े आराम से पाल सकते हैं, तो अब उस किसानों से ही हम दोनों पति-पत्नी का जीवन निर्वाह अच्छे ढंग से हो सकता है। उन्होंने अपने पुराने पेशे में ही बने रहने का निश्चय कर लिया था।

रामू और लक्खू अपने हर संभव प्रयास के बावजूद बहादुर चाचा को उनके इरादे से डिगा नहीं सके। अंत में उन्होंने निश्चय किया कि किसी भी हालत में वे माता-पिता को आराम देंगे। उन्होंने निश्चय किया कि एक और बैल खरीद कर पिताजी के पास वर्तमान एक बैल की जगह जोड़ा बैल कर देंगे और मासिक तनखाह पर एक हलवाहा रख देंगे जो खेत की जुताई-निकाई वगैरह सब काम करेंगे। बच्चों की कुछ ऐसी जिद के आगे माता-पिता हमेशा झुक जाते हैं बशर्ते कि उससे किसी की क्षति न हो, खासकर बच्चों की। बहादुर चाचा को भी उन दोनों की जिद के आगे हार माननी पड़ी। पर उन्होंने जगदीश चाचा की भी चर्चा बच्चों के सामने की। उनका कहना था कि सारा जीवन हम दोनों ने साथ निभाया। न केवल साथ निभाया बल्कि भाई की तरह एक-दूसरे के सुख-दुख में साथ निभाया। आज मैं उन्हें छोड़ दूँ यह मुझे गंवारा नहीं हो रहा है। उनके लिए भी हमें कुछ करना होगा। वैसे तुम लोगों की मर्जी। दोनों बेटों को संस्कार भी बहादुर चाचा ने ही दिया था। वे भी जगदीश चाचा से इतने हिले-मिले थे कि उन्होंने भी पिता के इस प्रस्ताव को अस्वीकार नहीं किया। उन्होंने जगदीश चाचा को भी एक बैल खरीदकर दे दिया ताकि उनका भी काम निर्बाध रूप से चलता रहे।

अब क्या था, दोनों दिन दूनी, रात चौगुनी तरक्की करने लगे। कृषि को किस प्रकार उन्नत किया जाए इसके लिए रामू और लक्खू हर मौसम में अपने पिता और जगदीश चाचा को सलाह देते रहे। वे भी उनके कहे अनुसार काम करते गये।

आज छोटे किसानों के बीच बहादुर चाचा और जगदीश चाचा दोनों ही एक सम्मानजनक जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

रंजीत कुमार सिन्हा
अवकाशप्राप्त मुख्य टंकक

तनावमुक्त जीवन के मूलमंत्र

आज के तनाव पूर्ण जीवन के मूल में शहरीकरण के कारण बढ़ता हुआ एकाकीपन, सीमित संकुचित होता परिवार, प्रकृति की गोद से निकल कंक्रीट जंगल में बसा हुआ मानव जीवन और रोज़मर्रा की आपाधापी सन्निहित हैं जिसने हमें एक ओर बेहद व्यस्त बना दिया है तो दूसरी ओर इसी व्यस्तता ने हमें अपने परिवार, दोस्त बंधु और रिश्तेदारों से भी दूर कर दिया है।

सोशल मीडिया और इसके आभासी दुनियावी मायाजाल में केवल बच्चे और युवा ही नहीं बल्कि कामकाजी वर्ग भी बुरी तरह उलझ गया है।

हमारे आदर्शों के प्रतिमान बदल गए हैं। जीवन मूल्य, प्राथमिकताएँ और विचार व्यवहार के ढंग भी एक अलग ही रूप में उभर कर सामने आए हैं। भोग विलासिता, स्वयं के लिए जीने, स्व सुख के लिए भौतिक आरामदायक वस्तुओं का संग्रहण एक ज्वलंत समस्या के रूप में उभर कर आ रहा है।

‘You live only once, I me myself’ जैसे नए जुमले खूब उछाले जा रहे हैं। युवा वर्ग की भटकन, उच्छृंखलता और अनुशासनहीनता की झलक यत्र तत्र सर्वत्र उजागर है।

आज के बदलते परिवेश में हम बेहतर जीवन जीने के लिए किसी की राय ले रहे हैं, राय मान रहे हैं अथवा किसी चल रही परिपाटी को आँख मूंदकर अपना रहे हैं, तो वह है सोशल मीडिया। इस सोशल मीडिया पर उपलब्ध सुखमय जीवन जीने का गुरुमंत्र यदि कुछ है तो वह है ‘ऋणम कृत्वा घृतम पीवेत्’

ऐसे में दूरदर्शन पर, पान की दुकान पर, सिनेमा हॉल, मोबाइल, बाज़ार, मॉल यानि हर जगह हमें जो नजारा दिखता है वह है आसान जीवन के लिए बैंक से लोन लेकर भौतिक सुख साधनों की खरीद।

नौकरी में नए आए लोगों में जाने क्यों बहुत जल्दी जीवन जी लेने, सब कुछ और ऐशोआराम पा लेने की होड़ लगी हुई है। इस अंधी दौड़ में सफल केवल उस व्यक्ति को माना जाने लगा है जिसके पास बंगला-गाड़ी, नौकर-चाकर अच्छा वेतन पैकेज, विदेश भ्रमण की औकात, क्लब, पार्टी और आधुनिकता के तमाम सरंजाम मौजूद हों। मध्यम वर्ग में भी कमाऊ बहू को ही प्राथमिकता दी जाने लगी है। Double income no kid जैसी मानसिकता युवा वर्ग में भयंकर रूप से घर करने लगी है।

एक और बड़ा परिवर्तन जो हमारी जीवन शैली को बहुत गंभीर रूप से प्रभावित कर रही है वह है खानपान की गलत आदतें। घर पर ताज़ा बने दाल, भात, सब्जी, सलाद का स्थान पिज्जा, पास्ता, बर्गर, मैगी ने ले लिया है। देर रात तक जागना और सुबह देर तक सोते रहना, सैर, कसरत और योग-ध्यान के लिए बिलकुल समय ना होना, मानो स्ट्रेस सिंबल ही बन गए हैं। कॉरपोरेट जगत से जुड़े हुए कर्मि सचमुच ‘ये बेचारा - काम के बोझ का मारा’ के जीवंत पात्र जैसे दिखते हैं। ऐसे में कम उम्र में ही तनाव (Stress) और चिंता (anxiety) से ग्रसित रहना, आश्चर्य की बात नहीं है।

45 से 50 की उम्र होते होते करीब 75 से 80 प्रतिशत लोग डॉक्टरों की शरण लेते हैं। फिर शुरू होता है जाँच, दवाओं और प्रतिबंधों का लगातार चलने वाला सिलसिला।

अब प्रश्न उठता है क्या इस चक्कर से बचाव संभव है? मेरी राय में बहुत हद तक संभव है, एक तनाव मुक्त (स्ट्रेस फ्री) जीवन शैली अपना कर। कुछ मूल मंत्र हैं, जिनके पालन से शारीरिक-मानसिक संतुलन के साथ-साथ तनाव मुक्त जीवन जिया जा सकता है। आइये जानते हैं कैसे :-

- ❖ हर सुबह कम से कम एक घंटा स्वयं को दें। सैर पर जाएं, योग करें, संगीत सुनें, बागवानी करें, इनमें से जिसमें आपकी रुचि हो, करें। निचोड़ यह की स्वयं के साथ गुजारे हुए चंद मिनट आपके मूड को फ्रेश रखने में सहायक होंगे।
- ❖ अपने जीवन की तुलना किसी और के जीवन से न करें। जो उपलब्ध है, उसमें खुश रहें। Be the best version of yourself.
- ❖ जिस शहर में हों, आस-पास की सुंदर जगहों पर दोस्तों/परिवार के साथ कभी-कभी पिकनिक या सप्ताहांत के लिए घूम कर आए।
- ❖ अपने माता-पिता से लगातार संपर्क में रहें उनका सम्मान करें उनके लिए समय निकालें, उनके पास बैठें। बड़ों के स्नेह और अपनेपन से आपको सुकून और शांति का अनुभव होगा।
- ❖ 'सादा जीवन, उच्च विचार' पर अमल करें। अपने विचारों में शुद्धता और पवित्रता बनाए रखें। ईर्ष्या, द्वेष, चुगलखोरी, बेईमानी जैसे व्यवहार से परहेज करें।
- ❖ किसी ऐसी संस्था से जुड़ें, जो लोक-कल्याण के कार्य से जुड़े हों। परोपकार और मानवता सबसे बड़ा धर्म है-इसे अपने आचार-विचार में ढालें।
- ❖ 'जो बीत गई, सो बात गई' पर अमल करें। जीवन में पूर्व में घटी घटनाओं को, उनसे संबंधित सोच को वहीं छोड़, जीवन में आगे बढ़ना सीखें। जिन स्थितियों पर आपका नियंत्रण नहीं, उन स्थितियों से लड़ना छोड़ दें।
- ❖ अपने आस-पास सकारात्मक और ऐसे मित्रों की संगति में रहें, जो आपके जैसे सोच-विचार रखते हों। विपत्ति और मुसीबत में आपका साथ देने जैसी नीयत रखते हों।
- जीवन की हर मुश्किल का हल ढूंढने में न जुटे रहें। कुछ मुश्किलों के हल वक्त पर छोड़ दें। परम शक्ति (super power) या ईश्वर में आस्था रखें।
- ❖ हर हाल में खुश रहें। जीवन का हर क्षण भरपूर जी लेने की कोशिश करें।
- दैनिक जीवन में इन बदलावों से निश्चित रूप से तनाव जैसी स्थिति नहीं रहेगी और आप एक खुशहाल जीवन जीने में सक्षम होंगे।

सागरिका बोस
पुत्री-किरण बोस
राजभाषा अधिकारी

हृदय की कोई भाषा नहीं है, हृदय-हृदय से बातचीत करता है।

अखिल भारत के परस्पर व्यवहार के लिए ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे जनता का अधिकतम भाग पहले से ही जानता-समझता है।

– महात्मा गाँधी

मेट्रो रेल, कोलकाता – एक नजर

अगस्त, 2018 में मेरे श्रीमान जी ने बताया कि उनका ट्रांसफर (स्थानान्तरण) आर. डी. एस. ओ. (R.D.S.O.) से कोलकाता मेट्रो रेलवे हो गया है तो मैंने आश्चर्य से पूछा कि आपने डिपुटेशन के लिये कब आवेदन किया? श्रीमान जी ने बताया कि नहीं भाई, कोलकाता मेट्रो रेल भारतीय रेल का ही अंग है। यानी कि यह एकमात्र मेट्रो रेल सेवा है जो रेल मंत्रालय के अन्तर्गत आता है। अन्य सभी राज्यों की मेट्रो कॉरपोरेशन है। 20 दिसम्बर, 2010 को कोलकाता मेट्रो रेल को क्षेत्रीय रेलवे का दर्जा मिला था। इसके पहले यह पूर्व रेलवे का हिस्सा था।

मन यादों के गलियारों में घूमने लगा। फरवरी 2000 में मैं बुआ के बेटे की शादी में कोलकाता आयी थी और मेट्रो रेल का सफर किया था। मेरे फूफाजी ने बड़े गर्व से कोलकाता की शान मेट्रो रेल की सवारी अपने अतिथियों को कराया था। तब यह शायद पर्यटन का हिस्सा होती थी। दिल्ली मेट्रो रेल की शुरुआत 2002 में हुई थी। बचपन में भी याद किया था कि भारत की पहली मेट्रो रेल सेवा कोलकाता में शुरू हुई थी। होना भी चाहिए था क्योंकि कोलकाता (कलकत्ता) ब्रिटिशकालीन भारत की पहली राजधानी थी।

सितम्बर, 2018 में हम लोग मेट्रो रेल परिवार से जुड़ गये। मेट्रो रेल कोलकाता की दशा, दिशा, इतिहास और कार्यप्रणाली को समझने का अवसर मिला। इस लेख के द्वारा मैंने अपने सुधि पाठकों को भी इस जानकारी से अवगत कराने का एक प्रयास किया है :-

कोलकाता मेट्रो रेल भारत की पहली सुनियोजित और क्रियाशील “Rapid Transit System” है। सितम्बर, 1919 में शिमला की विधान परिषद में श्री डब्ल्यू. ई. ग्रुम (W. E. Grum) ने एक कमिटी बनाई और इस कमिटी ने कलकत्ता (कोलकाता) के लिये एक मेट्रो लाइन की संस्तुति की। अत्यधिक खर्च को देखते हुए इस योजना को निरस्त कर दिया गया।

सभी कोलकातावासी और उनकी आने वाली पीढ़ियां

डा. विधान चंद राय की सदैव ऋणी रहेंगी जिन्होंने कोलकाता में भूमिगत मेट्रो रेल संचालन का सपना देखा। 1949 में डा. राय ने फ्रांस मेट्रो से एक टीम बुलाया और कोलकाता में मेट्रो रेल की संभावनाओं का सर्वे कराया। फ्रेंच टीम ने अपने सर्वेक्षण के बाद यह पाया कि हावड़ा मैदान से सियालदह और पाइकपाड़ा से कालीघाट तक 50,000 यात्री प्रतिघंटा क्षमता के साथ भूमिगत मेट्रो रेल सेवा शुरू की जा सकती है।

फरवरी, 1969 में भारत सरकार के योजना आयोग द्वारा गठित मेट्रोपॉलिटन ट्रांसपोर्ट टीम ने कोलकाता के लिये “त्वरित यातायात व्यवस्था” या “Rapid Transit System” की संस्तुति की।

“त्वरित यातायात व्यवस्था” को कार्यान्वित करने के लिये भारत सरकार ने सोवियत रूस और पूर्व जर्मनी के इंजीनियरों के साथ मिलकर 1970 में एक सर्वे कराया। इस सर्वे रिपोर्ट में दमदम से टॉलीगंज (16.45 कि.मी.) की लाइन खोलने की संस्तुति की गयी।

29 दिसम्बर, 1972 को डा. राय के सपने को मूर्त रूप मिला जब तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने आर.टी.एस. द्वारा स्वीकृत (जून 1972) दमदम – टॉलीगंज मेट्रो रेल परियोजना का शिलान्यास किया। डिप्टी चीफ इंजीनियर श्रीधरन (भारत में मेट्रो रेल के जनक) की देखरेख में दमदम से टॉलीगंज लाइन (16.45 कि.मी.) पर काम शुरू हुआ। (दमदम से टॉलीगंज व्यस्त मार्ग है।)

किसी भी नये काम को अंजाम देने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वैसा ही कुछ मेट्रो रेल के निर्माण में भी हुआ। यद्यपि रेल के अनुभवी इंजीनियर्स ने अपनी योग्यता और अनुभव का भरपूर उपयोग किया लेकिन व्यवहारिक समस्याएं बहुत थीं। कहां ऑफिस बनाया जाए, निर्माण सामग्री का भंडारण कहां किया जाये, सड़क और जल परिवहन कहां से सुगम होगा आदि। इन सबके निवारण के लिये एक महाप्रबंधक की नियुक्ति की गई जो मार्टिन बर्ण बिल्डिंग से अपना

कार्य निष्पादन करते थे।

डिजाइन और ड्रॉइंग जिसे रंजी स्टेडियम (ईडेन गार्डन) में दर्शक दीर्घा के नीचे बनाया गया। कोलकाता पोर्ट ट्रस्ट को कैसे भुला सकते हैं जिसने अपनी भूमि निर्माण सामग्री के भंडारण के लिये उपलब्ध कराई। दूसरा भंडारण डिपो 'मैदान' में बना। 'मैदान' के पास एक 'जनरल टैंक' था। उसको भी निर्माण कार्य के लिये सुखाया गया।

पूर्व रेलवे और रक्षा मंत्रालय का भी सराहनीय योगदान रहा। राज्य सरकार और हाईकोर्ट ने भी निर्माण कार्य सरल बनाया। राज्य सरकार ने यातायात व्यवस्था विशेषकर 'श्यामबाजार' और 'एस्प्लानेड' के बीच (यहां बहुत भीड़ होती थी।) नियंत्रित करने और अन्य जनहित सुविधाओं के निर्बाध संचालन में अपना अमूल्य योगदान दिया।

रेल इंजीनियरों के अतिरिक्त तत्कालीन रेलमंत्री (जो बंगाल के थे) श्री ए. बी. ए. गनीखां चौधुरी ने इस प्रोजेक्ट की अगुवाई की। या यूं कहें कि सारी कायनात लग गई थी मेट्रो रेल चलाने के लिये।

दिसम्बर, 1983 में 11 वर्ष बाद मेट्रो रेल का पहला ट्रायल रन एस्प्लानेड और भवानीपुर (अब नेताजी भवन) के बीच हुआ।

24 अक्टूबर, 1984 का वह ऐतिहासिक दिन था जब चालक 'श्री तपन कुमार नाद' और 'श्री संजय कुमार सील' देश की पहली मेट्रो रेल लेकर 'एस्प्लानेड' से लेकर 'भवानीपुर' (अब नेताजी भवन) तक चले। लाखों कोलकाता वासी इस स्वर्णिम पल के साक्षी बने और गर्व के साथ "डा. राय" को सादर नमन किया। यह तो थी 'नॉर्थ-साउथ कोरिडोर' की यात्रा कथा।

फिर कोलकाता देश का पहला शहर बना जहां हुगली के नीचे से मेट्रो रेल चलाने का परीक्षण (12 अप्रैल 2023 को हावड़ा मैदान से एस्प्लानेड) हुआ। इसको ईस्ट-वेस्ट कोरिडोर नाम दिया गया। हुगली नदी के नीचे रेल चलाने की परिकल्पना 1920 में की गई थी जब श्री डब्ल्यू. ई. ग्रुम (W. E. Grum) ने कोलकाता के लिये मेट्रो रेल का प्रस्ताव

रखा था। जो पूर्व में बागभरी को, पश्चिम में हुगली नदी के नीचे एक सुरंग द्वारा हावड़ा को जोड़ना था। इसको ईस्ट-वेस्ट ट्यूब रेलवे का नाम दिया गया था।

1971 में नार्थ-साउथ मेट्रो कोरिडोर के साथ ही ईस्ट-वेस्ट कोरिडोर का भी मास्टर प्लान तैयार किया गया जिससे कि दो बड़े व्यवसायिक केन्द्र हावड़ा और सियालदह को जोड़ा जा सके। इसके लिये हुगली नदी के नीचे सुरंग बनाकर मेट्रो परिचालन की योजना बनाई गयी।

तत्कालीन प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह जी ने फंड स्वीकृत किया। 22 फरवरी 2009 को इस परियोजना का शिलान्यास हुआ और मार्च 2009 को निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ।

ईस्ट-वेस्ट कोरिडोर परियोजना के निर्माण के लिये कोलकाता मेट्रो रेल कारपोरेशन की स्थापना की गई (KMRC)। हुगली नदी के नीचे बनी सुरंग भारत की सबसे बड़ी पानी के अंदर बनी सुरंग है। इसे मेट्रो रेल के लिए के.एम.आर.सी. ने बनाया है।

हावड़ा मेट्रो स्टेशन सबसे गहराई में स्थित स्टेशन है (33 फीट)। ईस्ट-वेस्ट कोरिडोर परियोजना का शिलान्यास सुश्री ममता बनर्जी, प. बंगाल के मुख्य मंत्री के कर कमलों द्वारा हुआ।

12 अप्रैल 2023 को सियालदह से एस्प्लानेड तक ट्रायल रन शुरू हुआ। शीघ्र ही कॉमर्शियल सेवा भी शुरू की जायेगी। ओवरहेड या अंडरग्राउंड मेट्रो नहीं बल्कि रोमांचक अंडरवाटर मेट्रो रेल में सफर करना है तो कोलकाता में आपका हार्दिक स्वागत है।

कोलकाता मेट्रो रेल दिन-प्रतिदिन चतुर्दिक विकास करे और जनसाधारण को त्वरित और सस्ती परिवहन सेवा उपलब्ध कराता रहे यही हम सबकी शुभकामनायें हैं।

सांख्यिकी : मेट्रो रेलवे आर्काइव्स से

संगीता कुमार

विरासत से...

पानी और पुल

गाड़ी ने लाहौर का स्टेशन छोड़ा तो एकबारगी मेरा मन कांप उठा। अब हम लोग उस ओर जा रहे थे जहां चौदह साल पहले आग लगी थी। जिसमें लाखों जल गए थे, और लाखों पर जलने के निशान आज तक बने हुए थे। मुझे लगा हमारी गाड़ी किसी गहरी, लम्बी अन्धकारमय गुफा में घुस रही है। और हम अपना सब-कुछ इस अन्धकार को सौंप दे रहे हैं। हम सब लगभग तीन सौ यात्री थे। स्त्रियों और बच्चों की भी संख्या काफ़ी थी। लाहौर में हमने सभी गुरुद्वारों के दर्शन किए। वहां हमें जैसा स्वागत मिला, उससे आगे अब पंजासाहिब की यात्रा में किसी प्रकार का अनिष्ट घट सकता है, ऐसी सम्भावना तो नहीं थी, परन्तु मनुष्य के अन्दर का पशु कब जागकर सभी सम्भावनाओं को डकार जाएगा, कौन जानता है?

यही सब सोचते-सोचते मैंने मां की ओर देखा, हथेली पर मुंह टिकाए, कोहनी को खिड़की का सहारा दिए वे निरन्तर बाहर की ओर देख रही थीं। खेत कट चुके थे। दूर-दूर तक सपाट धरती दिखाई दे रही थी। मुझे लगा,



मां की आंखों में से उतरकर यह सपाटता मन में पूरी तरह छा गई है। फिर मैंने अपने डिब्बे के दूसरे यात्रियों की तरफ देखा। उन पर भी गहरी उदासी छा गई थी। समझ में नहीं आ रहा था कि एकाएक ऐसी उदासी सब पर क्यों छा गई है?



डॉ महीप सिंह

(15 अगस्त, 1930 - 24 नवम्बर, 2015)
लेखक, स्तम्भकार और पत्रकार
2009 में भारत भारती सम्मान

‘तुम्हें तो रास्ता अच्छी तरह याद होगा।’ मैंने मां का ध्यान तोड़ते हुए पूछा, ‘सैकड़ों बार आना-जाना हुआ होगा तुम्हारा?’ मां मेरी ओर देखकर मुस्कराई। वह मुस्कराहट सब-कुछ खोकर पाई हुई मुस्कराहट थी। बोलीं, ‘मुझे तो रास्ते का एक-एक स्टेशन तक याद है। पर आज यह इलाका कितना बेगाना-बेगाना-सा लग रहा है। आज चौदह साल बाद इधर से जा रही हूं। पहले भी ऐसी ही जाती थी। लाहौर पार करते ही अजीब-सी उमंग नस-नस में दौड़ी जाती थी।’ सराई: हमारा गांव: जैसे-जैसे निकट आता जाता, वहां की एक-एक शक्ल मेरे सामने दौड़ जाती, स्टेशन पर कितने लोग आए होते... मां की आंखों में चौदह साल पहले की याद तरल हो आई थी। पिताजी ने अपना रोज़गार उत्तर प्रदेश में ही जमा लिया था। हम सब भाई-बहनों का जन्म पंजाब के बाहर ही हुआ था। मुझे याद है, पिताजी तो शायद साल में एकाध बार ही पंजाब आते हों, पर मां के दो-तीन चक्कर ज़रूर लग जाते थे। हममें जो छोटा होता वह मां के साथ जाता, और जबसे मुझे याद है मेरी छोटी बहन ही उनके साथ

जाया करती थी। उन दिनों, पंजाब का विभाजन घोषित हो चुका था, पंजाब की पांचों नदियों का जल उन्माद की तीखी शराब बन चुका था, मां ने फिर पंजाब जाने का फैसला किया था। सभी ने ऐसे विरोध किया जैसे वे जलती आग में कूदने जा रही हों। और वह सचमुच आग में कूदने जैसा ही तो था। परन्तु पिताजी सहित हम सब जानते थे कि मां को अपने निश्चय से डिगाना कोई आसान बात नहीं। उन्होंने सबकी बातों को हंसकर टाल दिया। बीस-बाइस दिनों में वह वापस आ गई। गांव के घर का बहुत-सा सामान वे बुक करा आई थीं। अपने साथ वे अपना पुराना चरखा और दही मथने की मथनी ले आई थीं फिर सारे पंजाब में आग लग गई। घर-के-घर, गांव-के-गांव और शहर-के-शहर उस आग में जलने लगा। आग रुकी तो लगा इधर तक सपाट फैली हुई जमीन अमृतसर और लाहौर के बीच से फट गई है और उस पार का फटा हुआ हिस्सा बीच में गहरी खाई छोड़कर न जाने कितना उधर खिसक गया है। हम सब भूल-से गए कि उस गहरी खाई के उस पार हमारा अपना गांव था, पक्की सड़क के किनारे पीछे की ओर एक नहर थी, और पास की झेलम नदी, अल्हड़ लड़की की तरह उछलती-कूदती बहती थी! आज मैं मां के साथ खाई पर राजकीय औपचारिकता के बांधे हुए पुल से गुजरकर उसी ओर जा रहा था जो कल कितना अपना था, आज कितना पराया है! मैं एक पुस्तक के पन्ने उलट रहा था, मां ने पूछा, 'यह गाड़ी सराई स्टेशन पर रुकेगी?' मैंने कुछ सोचा फिर कहा, 'हां रुकेगी शायद। पर पहुंचेगी रात के एक-दो बजे। हम लोग गहरी नींद में सो रहे होंगे। स्टेशन कब आकर निकल जाएगा, पता भी नहीं लगेगा। और अब अपना रखा ही क्या है वहां?' मां के चेहरे पर खिसियाहट-सी दौड़ गई। बोलीं, 'तुम्हारे लिए पहले भी वहां क्या रखा था?' मेरी बात से मां को चोट पहुंची थी। बिना और कुछ बोले मैं सिर झुकाकर अपनी पुस्तक के पन्नों में उलझ गया।

धीरे-धीरे अंधेरा छाने लगा। मां ने पोटली खोलकर खाने के लिए कुछ निकाला। मेरे एक दूर के मामाजी हमारे साथ थे। तीनों ने मिलकर कुछ खाया और सोने की तैयारी करने लगे। मामाजी तो दस मिनट में ही खरटि भरने

लगे। मैं भी एक ओर लुढ़क गया। मां वैसी ही बैठी रहीं। कुछ देर बाद एकाएक मेरी आंख खुली, देखा मां, वैसे ही बाहर फैले हुए अंधेरे की ओर निष्पलक देखती हुई बैठी हैं। घड़ी देखी, साढ़े दस बज गए थे। मैंने कहा, 'मां तुम भी लेट जाओ ना।' 'अच्छा!' उनके मुंह से निकला और वे अधलेटी-सी हो गईं। उस अधनींदी अवस्था में मैंने कोई स्वप्न देखा, ऐसा तो मुझे याद नहीं आता, पर उस नींद में भी कुछ घबराहट अवश्य होती रही थी। शायद किसी अस्पष्ट स्वप्न की ही घबराहट हो। कोई लाल-सी तरल चीज मुझे अपने चारों ओर फिरती अनुभव होती थी और मुझे लग रहा था उस लाल-लाल गाढ़ी-सी चीज पर मेरे पैर फच-फच पड़ रहे हैं। फिर एकाएक मैं हड़बड़ा कर उठा। मां मुझे झकझोर रही थीं और अजीब-सी घबराहट और उत्तेजना से उनके हाथ कांप रहे थे। 'क्या है?'

'देखो यह बाहर शोर कैसा है?'

मैंने बाहर झांककर देखा। हमारी गाड़ी छोटे-से स्टेशन पर खड़ी थी। प्लेट-फॉर्म पर लैम्प पोस्टों की हलकी-हलकी रोशनी थी और अजीब-सा कोलाहल वहां छाया हुआ था। एकबारगी मेरा रोयां-रोयां कांप उठा। चौदह साल पहले की अनेक सुनी-सुनायी घटनाएं बिजली



बनकर कौंध गई, जब दंगाइयों ने कितनी गाड़ियों को जहां-तहां रोककर लोगों को गाजर-मूली की तरह काट डाला था। मामाजी जागकर मेरा कन्धा हिला रहे थे। 'अरे क्या बात है?' तभी मेरे कानों में आवाज़ पड़ी। उस भीड़ में से कोई चिल्ला रहा था, 'अरे इस गाड़ी में कोई सराई का है?'

'यह कौन-सा स्टेशन है?' मैंने मां से पूछा। मां ने कहा, 'सराई - अपने गांव का स्टेशन।' बाहर से फिर आवाज़ आई, 'अरे इस गाड़ी में कोई सराई का है?' मैंने मां की ओर देखा। उनके चेहरे पर पूर्ण आश्चर्य था। 'पूछो इनसे, क्या बात है?' मैंने खिड़की से गरदन निकाली। बहुत-से लोग घूमते हुए पुकार रहे थे, 'अरे कोई सराई का है?' पास से जाते हुए एक आदमी को बुलाकर मैंने पूछा, 'क्या बात है जी?' 'आपमें कोई इस गांव का है?' 'हां, हम हैं इस गांव के ...' मां आगे आकर बोली। 'तुम सराई की हो?' उस आदमी ने ज़ोर देकर पूछा। 'हां, जी।' मां के इतना कहते ही स्टेशन पर चारों ओर शोर मच गया। इधर-उधर घूमते हुए बहुत-से आदमी हमारे डिब्बे के सामने जमा हो गए। फिर कई आवाज़ें एक-साथ आईं। 'हम सराई के ही हैं...' मां ने ज़ोर देकर कहा, 'इसी



गांव के?' उपस्थित जनसमुदाय में एक कोलाहल-सा हुआ। किसी की आवाज़ आई, 'तुम किसके घर से हो?' मां ने मेरी ओर देखा। मैंने कहा, 'मेरे

पिताजी का नाम सरदार मूलासिंह है। ये मेरी मां हैं।' 'तुम मूलासिंह के बेटे हो?' कई लोग एक-साथ चिल्लाए, 'तुम मूलासिंह की बीवी हो... रवेलसिंह की भाभी? कैसे हैं सब लोग...?' कहते-कहते कितने ही हाथ हमारी ओर बढ़ने लगे। लोग हमारे सम्बन्धियों में सबकी कुशल-क्षेम पूछते हुए अपने हाथ की पोटलियां मुझे और मां को थमाते जा रहे थे। मैं और मां गुमसुम से उन्हें ले-लेकर अपनी सीट पर रखते जा रहे थे। देखते-देखते हमारी बर्थ कपड़ों की छोटी-छोटी पोटलियों से भर गई। मैं हक्का-बक्का-सा यह देख रहा था। मां अपने सिर का कपड़ा बार-बार संभालती हुई हाथ जोड़ रही थीं। खुशी से उनके होंठ फड़फड़ा रहे थे। मुंह से निकल कुछ भी न रहा था और लगता था आंखें अभी चू पड़ेंगी। वहीं खड़े गार्ड ने हरी लालटेन ऊपर उठाई और कोट की जेब से सीटी निकाली। मैंने देखा तीन-चार आदमियों ने उसे पकड़-सा लिया। 'अरे बाबू, दो-चार मिनट और खड़ी रहने दे गाड़ी को। देखता नहीं, ये बीवी इसी गांव की हैं...!' और एक ने उसका लालटेन वाला हाथ पकड़कर नीचे कर दिया। 'भरजाई, सरदारजी कैसे हैं? उन्हें क्यों नहीं लाई, पंजे साहब के दरशन कराने?' एक बूढ़ा-सा मुसलमान पूछ रहा था। मां ने दोनों हाथों से सिर

का कपड़ा और आगे कर लिया, उनके मुंह से धीरे से निकला, 'सरदारजी नहीं रहे...!' 'क्या...? मूलासिंह गुज़र गए? क्या हुआ था उन्हें?' मां चुप रही, मैंने जवाब दिया, 'उनसे पेट में रसोली हो गई थी। एक दिन वह फूट गई और दूसरे दिन पूरे हो गए।' 'ओह, बड़े ही नेक बन्दे थे, खुदा उन्हें अपनी दरगाह में जगह दे।' उनमें से एक ने अफ़सोस प्रकट करते हुए कहा। कुछ क्षण के लिए सबमें खामोशी छा गई। 'भरजाई, तेरे बच्चे कैसे हैं?' 'वाहे गुरु जी की किरपा है, सब अच्छे हैं।' मां ने धीरे से कहा। 'अल्लाह, उनकी उम्र दराज़ करे।' कई आवाज़ें एक-साथ आईं। 'भरजाई तुम अपने बच्चों को

लेकर यहां आ जाओ।' किसी एक ने कहा, और कितनों ने दुहराया, 'भरजाई, तुम लोग वापस आ जाओ... वापस आ जाओ।' प्लैटफ़ॉर्म पर खड़ी कितनी आवाज़ें कह रही थीं: 'वापस आ जाओ!' 'वापस आ जाओ!'

मैंने सुना, मेरे पीछे खड़े मामाजी कुढ़ते हुए कह रहे थे, 'हूँ...। बदमाश कहीं के! पहले तो मार-मारकर यहां से निकाल दिया, अब कहते हैं वापस आ जाओ। लुच्चे!' पर प्लैटफॉर्म पर खड़े लोगों ने उनकी बात नहीं सुनी थी। वे कहे जा रहे थे, 'भरजाई, तुम अपने बच्चों को लेकर वापस आ जाओ! बोलो भरजाई, कब आओगी। अपना गांव तो तुम्हें याद आता है? भरजाई वापस आ जाओ...' मां के मुंह से कुछ नहीं निकल रहा था। वे सिर का कपड़ा संभालते हुए हाथ जोड़े जा रही थीं। दूर खड़ा गार्ड हरी लालटेन दिखाता हुआ सीटी बजा रहा था। इंजन ने सीटी दी। गाड़ी फकफक करती हुई चल दी। भीड़-की-भीड़ हमारे डिब्बे के साथ चल दी। 'अच्छा, भरजाई सलाम...अच्छा बेटे सलाम...रवेलसिंह को मेरा सलाम देना...सबको हमारा सलाम देना...' मां के हाथ जुड़े हुए थे और मुंह से गदगद स्वर में धीरे-धीरे कुछ निकल रहा था। धीरे-धीरे गाड़ी कुछ तेज़ हो गई। हम दोनों खिड़की से सिर निकाले हाथ जोड़े रहे। भीड़ के लोग वहीं खड़े हाथ ऊपर उठाए चिल्लाते रहे। गाड़ी स्टेशन के बाहर निकल आई तो मैंने बर्थ से पोटलियां हटाकर एक ओर कीं और मां से कुछ कहने के लिए उनकी ओर देखा। मां की आंखों से आंसुओं की अविरल धार बह रही थी, बहे जा रही थी। वे बार-बार दुपट्टे से आंखें पोंछे जा रही थीं, पर टूटे हुए बांध का पानी बहता ही जा रहा था।

हमारी गाड़ी झेलम के पुल पर आ गई थी। रात्रि की उस नीरवता में खड़र... खड़र... खड़र...की आवाज़ आ रही थी। मैं खिड़की से झांककर जेहलम का पुल देखने लगा। मैंने सुना था जेहलम का पुल बहुत मज़बूत है। पत्थर और लोहे के बने उस मज़बूत पुल को अंधेरे में मैं देख रहा था। मेरी दृष्टि और नीचे की ओर जा रही थी, वहां घुप्प अंधेरा था, पर मैं जानता था वहां पानी है, जेहलम नदी का कल-कल करता हुआ स्वच्छ और निर्मल पानी, जो उस पत्थर और लोहे के बने हुए पुल के नीचे से बह रहा था।



कुछ तुम्हारी कुछ मेरी बात

रोशनी की ज़रूरत नहीं,
अंधेरो से मुलाकातें करते हैं।
कुछ दीये बुझ गए तो गम नहीं।
जुगनुओं से आंखें चार करते हैं।
चलो आज बैठ कर यहां,
कुछ तुम्हारी और कुछ मेरी बात करते हैं।

देखकर ग़म अगर किसी का तुम्हारी आंखें नम हों।
तो समझ लेना अभी ज़िंदा हो तुम।
पाकर ग़म अगर किसी से तुम उसके लिए दुआ मांग सकते हो।
तो समझ लेना अभी ज़िंदा हो तुम।
अपने ख़्वाब की ज़रूरत नहीं,
सैंकड़ों आंखों में ख़्वाब भरते हैं।
मंदिर, मस्जिद अब कौन जाए इबादत करने को।
किसी के नन्हें होठों पर,
मुस्कुराहट भरते हैं।
चलो आज बैठ कर यहां,
कुछ तुम्हारी और कुछ मेरी बात करते हैं।

है नाम सिकंदर, कहकर जिसने जीत लिया था दुनिया को।
जब रुखसत हुआ, दो हाथ थे खुले, दिखलाया था ये दुनिया को।
मैं भी शायद ऐसे ही जाऊँ।
तुम भी शायद ऐसे ही जाओ।
फिर उधार लिए इस समय में क्यों सब अपनी बातें करते हैं?
चलो आज बैठकर यहां?
कुछ तुम्हारी और कुछ मेरी बात करते हैं।

संतोष कुमार साव
कनिष्ठ इंजीनियर / बिजली

ये उन दिनों की बात है ...

जब जिंदगी में न तो चाहतों के अतिरेक थे और न ही आसक्तियों का आधिक्य। अभिलाषाएं व लालसाएं सीमित थीं, तो न वर्तमान की निरर्थक परवाह न भविष्य की उद्विग्नता। जिंदगी आजाद पंछी सी मानो नीले वीतान पर विचरण करती हुई, निर्विकार निश्चल समाज का हिस्सा। स्मृतियों के झरोखों से कुछ कहती, कुछ सुनाती जिंदगी के वे पल जैसे 70 के उस दशक की ओर ले चलने को आतुर हैं, यादें मचल सी रही हैं, मन बचपन के उन लम्हों को एक बार फिर से शब्दों की दुनिया में जी लेने को व्याकुल है। जिंदगी के मायने को बयां करते किसी कवि की निम्न पंक्तियां जैसे इन भावनाओं को और भी उद्बलित कर रही हैं :-

*जिंदगी क्या है?
बनते बिगड़ते हालातों का
हिसाब है जिंदगी,
हर रोज एक नया पन्ना जुड़ता है जिसमें
वो ही एक किताब है जिंदगी।
हर पल एक नया किस्सा,
तैयार रहता है अपना अंत पाने को,
तड़पते हैं पेड़ और पंछी पतझड़ में
जैसे बसंत पाने को।
छिपा कर रखती है कई राज अनजाने से
कहने को वो हिजाब है जिंदगी।*

यह वह दौर था जब बच्चों को स्कूल पहुँचाने या लाने की रीत न थी। हमें खुद ही कोसों दूर पैदल चलकर स्कूल जाना होता था। साइकिल, बस या वैन जैसी सुविधा का हमारे पास कोई विकल्प न होता था। स्कूल में हमारे साथ कुछ अच्छा या बुरा होगा ऐसी शंकाएं हमारे अभिभावकों में न होती थी। पैरेंट टीचर मीटिंग जैसे कोई रिवाज न थे। फिर भी अनुशासन की कमी न थी।

स्कूल में टिफिन ले जाने जैसी कोई प्रथा हमें याद नहीं आती। सुबह भोजन के नाम पर जो भात सब्जियां खाकर निकलते तो सीधे 4 बजे के बाद ही घर लौटकर भोजन नसीब होता। हां, कभी-कभार अगर घर में कुछ रोटियां

बनती तो एकाध यूँही किताब कॉपियों के बीच ठूँस लेते। इस चक्कर में पुस्तकों के आवरण पर रोटियों के टुकड़े चिपक कर सूख जाते। कभी घर लौटते हुए उन चिपकी हुई सूखी रोटियों के टुकड़ों को चबाने में जो अदभुत तृप्ति थी उसे व्यक्त नहीं किया जा सकता।

जेब खर्च (पॉकेट मनी) जैसे शब्द तब हमारे लिए अपरिचित से थे। कभी पांच पैसे, कभी तीन पैसे या 25 पैसे बनसीब मिल जाएं तो लगता कोई खजाना हाथ लग गया हो। पांच पैसे में पांच लेमनचुस (चॉकलेट) पाकर हम



उसी में बहुत खुश हो लेते थे।

ट्यूशन जैसी शिक्षा व्यवस्था से हम अनजान हुआ करते थे। उस दौर में हमें केवल पास या फेल का हिसाब किताब ही ज्ञात था। रैंक अवश्य दिए जाते थे परंतु प्रतिशत (परसेंटेज) जैसी गंभीर अवधारणा से कोई विशेष नाता न था। पत्तों के बीच पीपल के पत्ते, मोर के पंख आदि रखने से पढ़ाई में हम तेज हो सकते हैं ऐसी अवधारणाएं भी हम रखते थे।

प्रत्येक वर्ष जब उच्चतर कक्षा में प्रोन्नत होते तो अधिकतर किताबें बड़े भाई-बहन या आस-पड़ोस के विद्यार्थियों से मांग कर जुटा लेते क्योंकि तब हर साल न किताब बदलती और न ही पाठ्यक्रम। कुछेक किताबें बाजारों से खरीदे लेते। फिर शुरू होता उन पुरानी पुस्तकों पर रद्दी समाचार पत्रों की जिल्द चढ़ाने और उनपर नाम लिखने का, जो एक वार्षिक उत्सव से कम न होता था। नई कक्षा में बैठने की एक अजीब सी खुशी मन को सराबोर करती। खजूर के पत्तों से बनी छोटी-छोटी चट्टाईयाँ या जूट अथवा प्लास्टिक के बोरों पर बैठकर कक्षाएं करने की जो अनुभूति थी कदाचित वातानुकूलित कमरों के बेंच और कुर्सीयों में कहां। हमारे माता पिता को हमारी पढ़ाई का बोझ है.. ऐसा कभी लगा ही नहीं।

स्कूल में कभी किसी कारणवश मिली सजा कभी हमारे अहम के आड़े नहीं आई। वस्तुतः अहम जैसी भावनाओं से हमारा रिश्ता शायद ही रहा हो। पैरों में न जूते थे न चप्पलें, पर हर प्रकार के खेल नंगे पांव खेलते हुए कभी इसकी कमी का रंज न हुआ। फटे पुराने कपड़ों को सिल सिलाकर बनाए गेंदों के साथ खेलने में क्या ही सुख था वह हमें ही पता है। एक वह वक्त था जब हम सभी दोस्त मिलकर भी एक गेंद खरीद पाने लायक पैसे इकट्ठे नहीं कर पाते थे और एक आज का वक्त है जब हममें से हर एक दोस्त के पास अकेले ही गेंद खरीदने की क्षमता है पर खेलने के लिए उन सभी दोस्तों को इकट्ठा कर पाना ही कहीं अधिक दुष्कर हो गया है।

हम अपने मां बाप को कभी यह बता ही नहीं पाए कि हमें उनसे कितनी मोहब्बत है, क्योंकि हमें लव यू मॉम या लव यू पा कहना नहीं आता था।

ये उन दिनों की बात है जब हमारे घर परिवार में सात-आठ सदस्य छोटे से घर के छोटे-छोटे कमरों में बड़े आराम से रह लेते थे। शादी ब्याह या छुट्टियों जैसे अवसरों

पर इन्हीं छोटे घरों में रिश्तेदार और उनके बच्चे भी आराम से समा जाते थे और जगह की कभी कमी महसूस न होती थी। घर छोटे जरूर होते थे पर घरों में रहनेवालों के दिल बड़े थे।

विवाह आदि के अवसर किसी उत्सव से कम न थे। सारा गांव एक परिवार हो जाता था। घरवालों से ज्यादा रिश्तेदार और पड़ोसी ही जिम्मेदारियां संभाल लिया करते थे। बाहर से आए रिश्तेदार और संबंधी पड़ोसियों के घरों में भी सो पाते थे।

ये उन दिनों की बात है जब घर में किसी के पास घड़ियां न होती थी, पर वक्त और समय परिवार के सभी सदस्यों के पास थी। आज परिवार में घड़ियां तो हरेक सदस्य के पास है पर समय और वक्त शायद ही किसी के पास हो।

उस वक्त मोबाइल कैमरे नहीं थे पर एक-एक पल की यादें आज भी ताजी हैं, शायद उस वक्त तस्वीरें दिलों में बनती थी, कैमरों में नहीं। सीमित संसाधनों के साथ ही जिंदगी खुशगवार थी, पैसे कम जरूर थे, पर खुशियां बहुत थी।

यह उस दौर की बात है जब Space/Privacy जैसे शब्दों के भाव ही पता न थे क्योंकि सारा गांव

मानो एक परिवार होता था। घर से खाने की थाली लेकर निकलते तो पड़ोस के काकी के किचन से सब्जियां ले लेते, फिर किसी तीसरे पड़ोसी के घर अपने बर्तन धोते और कभी तो किसी चौथे के घर में सो जाते। आज का दौर बदल गया है। मकान आलीशान हैं पर मन परेशान, कमरों में अटैच्ड बाथरूम हैं फिर भी निजता (प्राइवेसी) का रोना रो रहे हैं। छोटे-बड़े सभी को निजता चाहिए पर उन्हें शायद ही पता हो कि पड़ोस में रहता कौन है।

आज हम हर प्रकार की भौतिक सुख-सुविधा से संपन्न हैं, फिर भी फिक्रमंद हैं, बीपी, शुगर बढ़ रहा है। पैसे से



पैसा कैसे कमाएं इसी चिंता में घुले जा रहे हैं। घर, गाड़ी, बैंक में जमा धन, खुशियों के सामान सब हैं, पर खुशियाँ बांटने वाले नहीं हैं। उस दौर में मामा, फूफा, मौसी, चाचा के बच्चे सभी भाई बहन होते थे जो अब cousins हो गए हैं और उनके आगे दूर के रिश्तेदार बन गए हैं। कहने को फेसबुक, इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया पर हजारों मित्र हैं, कई sis और Bro भी बन गए हैं पर समय बिताने के लिए Mall और थिएटर का ही रूख करते हैं।

अब शादियों जैसे अवसरों पर रिश्तेदार बस अपनी उपस्थिति मात्र के लिए ही आते हैं, वे घरों में नहीं होटलों में ठहरते हैं। अब खाने - खिलाने की ज़िम्मेदारी घर के बड़े बुजुर्ग, पड़ोसी और रिश्तेदार नहीं कैटरर्स उठाते हैं और घर के सारे सदस्य सज-धजकर, मेकअप करवाकर, खुद मेहमानों की तरह जाते हैं।

सोशल मीडिया के अवांछित दुष्प्रभाव ने सामाजिक रिश्तों के ताने-बाने को जैसे छिन्न-भिन्न कर दिया है। लाखों के भीड़ में भी इंसान कहीं अकेला खड़ा नजर आता है। रिश्ते मानो यांत्रिकृत से हो गए हैं और इनके मायने कहीं गुम से हो गए लगते हैं। ऐसा मालूम होता है कि हम एक सोशल मीडिया के कृत्रिम दुनिया में कृत्रिम रिश्तों के बीच एक कृत्रिम ज़िन्दगी जिए जा रहे हैं ...बस शायद यही आज का सच है।

जिंदगी के इस डगर में हमने बैलगाड़ियों से लेकर हवाई जहाज तक के सफर तय किए हैं। नंगे पांव चलकर हजारों रुपये के ब्रांडेड जूतों तक के सुख भोगे हैं। एक पैसे,

तीन पैसे, पांच पैसे से लेकर लाखों रुपये तक के जमाने देखे हैं। अनाज के बदले नमक और फल-फूल या किसी अन्य उपज के बदले घड़े, लोहे आदि वस्तुओं की अदली-बदली जैसी वस्तु विनिमय प्रणाली से आज के गूगल पे, फोन पे जैसे मुद्राविहीन विनिमय प्रणाली के साक्ष्य रहे हैं। हम उस दौर के भी साक्षी रहे हैं, जब तरबूज, आम, अमरूद और अन्य फलादि प्राकृतिक रूप से छोटे और स्वादिष्ट होते थे, पर अब ये आश्चर्यजनक रूप से लंबे और विशालकाय हो गए हैं और इनकी स्वभाविक पौष्टिकता कहीं कृत्रिम सी हो गई है। हमने मिट्टी के साबुन से लेकर पर्स तक के सफर तय किए हैं। लकड़ी के चूल्हे पर बनी रोटी में लगी राख का भी स्वाद लिया है। पांच पैसे में पांच लेमनचुस (संतरे की स्वाद वाली गोली) से 45 रुपये के किंडरजॉय तक का भी आनंद लिया है। समाहारतः कहें तो अतिशयोक्ति न होगी कि हमने 70 एवं 80 के दशक के श्वेत-श्याम (ब्लैक एंड व्हाइट) समय में भी अदभुत रूप से रंगीन और अत्यंत संतोष संपन्न बचपन जिया है जो आज की दौर के दम तोड़ते बचपन के परिकल्पना से परे है। उन पलों को याद करते हुए मन यह कहना चाहता है कि :

*‘चलो कि आज बचपन का कोई खेल खेलें,
बड़ी मुहत्त हुई बेवजह हंसकर नहीं देखा’
झूठ बोलते थे फिर भी कितने सच्चे थे हम
ये उन दिनों की बात है जब बच्चे थे हम*

राजेश एक्का,
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

"राष्ट्रभाषा के बिना आजादी बेकार है।"

- अवनींद्रकुमार विद्यालंकार

भाषा की समृद्धि स्वतंत्रता का बीज है।

- लोकमान्य तिलक

राष्ट्रभाषा हिन्दी का किसी भी क्षेत्रीय भाषा से कोई संघर्ष नहीं है।

- अनंत गोपाल शेवड़े

लोकल ट्रेन एवं उसके नित्य यात्री

महादेवी वर्मा ने कहीं एक जगह लिखा था। किसी भी जातिवाचक संज्ञा को हम जल्दी-जल्दी व्यक्तिवाचक संज्ञा बना देना चाहते हैं जैसे पालतू जानवर आदि। घर में आते ही या लाते ही हम उनका नामकरण कर देते हैं।

ये तो रही महान लोगों की बात, अब मेरे अनुसार हम सामाजिक प्राणी हर जगह समाज ढूँढते फिरते हैं।

ये समाज वो समाज है जहाँ सबकुछ है, यहाँ जीवन है, भक्ति है, कला है, मजा है, मज़ाक है, प्रेम है, तू-तू, मैं-मैं है, रूठना-मनाना है, हार-जीत है, गंदगी है, सफाई है, गाली गलौज है, सहायता है, चोरी है, सीना-जोरी है। लोकल ट्रेन में आपको समाज का हर रंग भरपूर मिलेगा। यूँ कहूँ कि भर-भर कर मिलेगा। एक बार बस चढ़ गए इसपर तो इस रंग में रंगना ही है आपको।

लोकल ट्रेन का सफर एक शुद्ध सामाजिक सफर है। ट्रेन में चढ़ते ही आप इस समाज में प्रवेश कर जाते हैं।

मैं यहाँ टॉर्च मारना चाहूँगा बंगाल के लोकल ट्रेन के लोकल दैनिक या नित्य यात्रियों पर यहाँ चर्चा होगी बंगाल के लोकल ट्रेन की।

लोकल ट्रेन कोई भी हो- गेदे से सियालदह या बंडेल से हावड़ा या सियालदह से बनगाँव या किसी शाखा की ट्रेन हो, हर जगह एक सी छवि।

इस विषय पर बहुत लोग बहुत कुछ बोलेंगे, टिप्पणी करेंगे, पर मैं कहूँगा लाल-लाल सीट, हॉकरों की आवाज, उनकी भाषा शैली, दैनिक यात्रियों के चुटकुले, पसीना, स्वेटर, बैग, बैग टाँगने का हुक, छाता, पानी का बोतल, भीड़ में धक्का, उनका झगड़ा, गुस्सा, मारपीट की बातें। इन सब की अलग बात है। लोकल ट्रेन में सबकुछ एक अलग स्थान रखता है। सब कुछ अपने आप में अलग है।

मैं भी एक दैनिक यात्री हूँ। रोज मैं लोकल ट्रेन से सफर



करता हूँ। उस ट्रेन की बात सुनाता हूँ जिस मैं रोज सफर करता हूँ। दैनिक यात्री एक विशेष प्रजाति के प्राणी होते हैं, ट्रेन इनके बाप की होती है, यह बात ये स्कूल कॉलेज या नौकरी जीवन से ही जान जाते हैं। दैनिक यात्री और साधारण यात्री में आकाश पाताल का अंतर होता है। इसे मैं कई उदाहरणों से साबित कर सकता हूँ- दैनिक यात्री ट्रेन के रंग-रंग से वाकिफ़ होते हैं। ट्रेन आज कितनी लेट करेगी, कौन सी ट्रेन आगे जाएगी, किस नंबर की पटरी पर दौड़ेगी, कौन सी ट्रेन इसे पार कर आगे निकल जाएगी आदि, आदि। अर्थात् ट्रेन परिचालन के वास्तविक ज्ञान का लोड सब दैनिक यात्री पर होता है। रेल प्रशासन तो इनके सामने बच्चे हैं। साधारण यात्री इन सब तथ्यों से बेखबर सिर्फ ट्रेन पर चढ़ते हैं यात्रा करने के लिए। उन्हें कुछ नहीं पता होता है। पर इसमें कोई दुख नहीं है दैनिक यात्री तो सहायता करने के लिए ही पैदा हुए हैं। बस एक बार पूछ लीजिये जनाब कि ये ट्रेन फलाना जगह जाएगी क्या? बस आपको उत्तर मिल जाएगा, एकदम पक्का उत्तर। ये तो अभिनव विचार प्रस्तुत करने में भी माहिर होते हैं- बस किसी दैनिक यात्री से पूछ लीजिये कि आपके अनुसार कैसे ट्रेन का परिचालन किया जाए, वें आपको पूरी गणित बता देंगे कि कैसे और क्या क्या सुधार किया जा सकता है। भले ही वे बातें आपको आकाशकुसुम या बेतुकी लगे पर वें बोलेंगे तो पूर्ण आत्म विश्वास एवं तर्क के साथ।

अब हम लोकल ट्रेन की सामाजिकता पर विचार करेंगे

कि कैसे लोकल ट्रेन एवं दैनिक यात्री सामाजिकता को पैदा करते हैं। सामाजिकता लोकल ट्रेन के यात्री में कूट-कूट कर भरी होती है। ये ट्रेन को अपना घर समझते हैं, ट्रेन इनके लिए एक अलग दुनिया है। बस कान लगाकर सुनते जाइए, यहाँ पर आपको हर प्रकार की बातें सुनने को मिलेगी कहीं पर घूमने जाने की बातें, पिकनिक की बातें, खान-पान की बातें, राजनीति की बातें, फिल्म की बातें, प्यार की बातें, ऑफिस पॉलिटिक्स की बातें, युवाओं की बातें, घर की बातें, बाहर की बातें हर प्रकार की बातों का लुप्त आप यहाँ उठा सकते हैं। किसी भी समस्या का हल आपको यहाँ मिल जाएगा, मायूसी खुशी में बदल जाएगी, एक अजीब टाइम पास का जरिया है ये ट्रेन का सफर और ट्रेन की ये समाजिकता। आप कह सकते हैं ये एक पुलिया है आपके और आपके स्कूल, कॉलेज एवं कार्यालय या किसी भी गंतव्य स्थान के बीच। इसे आराम से मस्त होकर पार कर जाइए, बस आप अपने स्थान पर पहुँच जाएंगे। लोकल ट्रेन बस एक ही बात बोलती है हमसे, बस ध्यान रहे ट्रेन की बातें ट्रेन में ही छोड़ दे, इसे घर पर मत ले जाईएगा।

लोकल ट्रेन अनेक लोगों की रोजी-रोटी का सहारा तो है ही, लोकल ट्रेन एक आनंद है, एक परम सुख है। यह एक परम सुख कैसे है एक उदाहरण प्रस्तुत हैं, मान लीजिये आप अपने गंतव्य स्थान पर समय से पहुँचने के लिए अपने घर से देर से हड़बड़ा कर निकले, दौड़ते-भगते स्टेशन पर पहुँच गए। आपके सोच के अनुसार आपके टारगेट वाली ट्रेन निकल गई होगी, हुआ उल्टा, टारगेट ट्रेन खुद लेट है आपके स्टेशन प्रवेश के साथ ट्रेन स्टेशन पर आई, आप अपने टारगेट ट्रेन पर हाँफ़तें हुए सवार हुए, इतना ही नहीं इसी के साथ-साथ आपको बैठने का भी सौभाग्य प्राप्त हो गया। इसे ही धर्मिय भाषा में परम सुख की प्राप्ति कहते हैं।

लोकल ट्रेन के सफर का एक और बहुत ही अभिन्न अंग है, हमारे हाँकर भाई-बंधु। सच में ये न रहे तो भीड़ में भी तन्हाई महसूस होती है। इन छोटे-मोटे व्यवसायों के मार्केटिंग, पैकेजिंग एवं अपने सामान को बेचने की अदा



अपने आप में अनूठी है।

वर्तमान में ट्रेड में चल रहा जुगाड़ बाद का सबसे अच्छा उदाहरण आपको लोकल ट्रेन में मिल जाएगा। ट्रेन में खचा-खच भीड़ है, आप ट्रेन में चढ़ नहीं पा रहे हैं, नित्य यात्री इसे कहेंगे अरे भाई ट्रेन तो फांका है। भीड़ के बीच से पतली रास्ता बना कर कैसे निकल जाना है, बैग रखने का अगर जगह न हो तो कैसे हुंका को फंसा कर बैग को टिका देना है, कैसे खुद के लिए आराम से खड़े रहने के लिए जुगाड़ के साथ स्थान बना लेना है, कैसे अपने दोस्त के लिए सीट को आरक्षित रखना है आदि, हर जुगाड़ की कला में ये सिद्धहस्त होते हैं।

अंत में जैसे हर लेख का अंत एक जबर्दस्त उपसंहार देना होता है नहीं तो लेख परवान नहीं चढ़ता ठीक उसी प्रकार इस लेख का उपसंहार भी प्रस्तुत है-

लोकल ट्रेन कोलकाता उपनगरी में रहने वाले लोगों के जीवन का लाइफलाइन है, लोकल ट्रेन बंद हो जाने का अर्थ ये तो नहीं की साँसे रुक जाएंगी पर हाँ, लोकल ट्रेन रुक जाने से जीवन के अनेक पहलू शून्य हो जाएंगे। जीविका बर्बाद हो जाएगी, अभ्यास नष्ट हो जाएंगे, अधिक खर्चा बढ़ जाएगा, बाजार दर में वृद्धि हो जाएगी, लोग मायूस हो जायेंगे और सबसे महत्वपूर्ण एक लोकल समाज नष्ट हो जाएगा। लोकल ट्रेन बंद होने की मार लोकल लोग लॉक डाउन के दौरान भोग चुके हैं। दांत नहीं रहने पर लोग दांत के मर्म को समझते हैं यही हाल इसी समय सभी ने महसूस किया था।

(शेषांश 24 पर)

तमिलनाडु जल्लीकट्टू का त्यौहार

मानव जीवन में थोड़ा दैनिक परिश्रम करने के बाद हम सभी को भ्रमण में जाने का मन करता है। लेकिन वर्ष 2020 में कोरोना की वजह से हम लगभग दो साल घर में बंद रहे। घर बैठे बाहर का काम करना सचमुच कठिन था। लंबे समय के बाद कोरोना से मुक्ति पाकर कहीं घूमने जाने की तैयारियां करने लगे। तब मेरे एक मित्र चेन्नई में रहते थे। वह काफी दिनों से मुझे और मेरे परिवार को चेन्नई आने का निमंत्रण दे रहे थे। अचानक मैंने चेन्नई जाने का कार्यक्रम तय कर लिया। जनवरी का महीना था। बच्चों के स्कूल में भी छुट्टियां थीं। हमारी गाड़ी 7 जनवरी को हावड़ा से रवाना होकर 8 जनवरी को करीब शाम पांच बजे चेन्नई पहुँच गयी। मेरे मित्र मुझे घर तक लिवा जाने के लिए स्टेशन पर आये हुए थे। देर रात हम घर पहुँच गये। हम लम्बी अवधि के बाद मिले थे, इसलिए भोजन आदि के पश्चात् हम दोनों मित्र गप्पें मारने लगे। समय कब निकल गया हमें पता ही नहीं चला। घड़ी देखी तो रात के ढाई बज चुके थे। हम लोग जल्दी-जल्दी सो गये। सुबह जल्दी जो उठना था।

दूसरे दिन न चाहते हुए भी हमें जल्दी उठना पड़ा। हमें घूमने जो जाना था। हम वहाँ के प्रसिद्ध समुद्री तट मेरिना बीच गये। वहाँ हम स्नान भी किए। पूरे दिन समुद्र की लहरों का आनन्द लेने के बाद शाम को बाजार का आनन्द लेते हुए अंधेरा होते-होते घर वापस आ गये। रात्रि का भोजन बाजार से मंगा लिया गया था। इसलिए हम सभी इकट्ठे बैठ कर भूली-बिसरी यादें ताजा करने लगे। बच्चे भी अपनी टीम के साथ खेल में मस्त थे।



उसी दिन मकर संक्रान्ति का त्यौहार भी था। इस अवसर पर वहाँ जल्लीकट्टू खेल खेला जाता है। जल्लीकट्टू तमिलनाडु का परम्परागत खेल है। वहाँ के गांवों में इस खेल का आयोजन बड़े उत्साह से किया जाता है। इसे दक्षिण भारत के कृषि प्रधान क्षेत्रों का एक महत्वपूर्ण त्यौहार माना जाता है। दरअसल इस समय तमिलनाडु में

फसल की कटाई होती है। फसल कटने के बाद वहाँ चार दिनों तक 'पोंगल' मनाया जाता है। इस उत्सव का तीसरा दिन पशु को समर्पित होता है और इसी दिन लोग जल्लीकट्टू का खेल खेलते हैं। परम्परा के अनुसार इस खेल की शुरुआत गांव के तीन बूढ़े बैलों को, जो गांव की शान माने जाते

हैं, खुला छोड़ कर की जाती है। उन बैलों को कोई भी नहीं पकड़ता है। इन तीनों बैलों के चले जाने के बाद जल्लीकट्टू का खेल प्रारंभ हो जाता है।

इस खेल के तहत गांव के ताकतवर और मजबूत बैलों के सींग में सिक्कों से भरी थैली बांधी जाती है और उसे लोगों की भीड़ में खुला छोड़ दिया जाता है। लोग उस सिक्के की थैली को प्राप्त करने के लिए बैल को काबू में करने का प्रयास करते हैं। इस प्रयास में बहुतेरे लोग घायल हो जाते हैं। इस होड़ में लोग न केवल घायल होते हैं बल्कि कभी-कभी तो लोग मरनासत्र भी हो जाते हैं। कभी-कभी तो थैली प्राप्त करने में लोगों की जान भी चली जाती है। इस साल भी दो लोगों की मृत्यु हो गयी थी।

'जल्लीकट्टू' मतलब 'सांड को गले लगाना'। जल्ली का अर्थ होता है 'सिक्का' और 'कट्टू' का अर्थ होता है 'बांधना'। इस खेल से जुड़ी एक रोचक बात है। पुराने-

जमाने में जो लड़का बैल के सींग से थैली खोल लेता था उसकी शादी हो जाती थी। यह प्रचलन अब समाप्त हो गयीं है।

जल्लीकट्टू तमिलनाडु की चार सौ साल पुरानी परंपरा है। यह खेल युवाओं के बीच बहुत ही प्रचलित था। प्राचीन काल में महिलाएं अपने वर को चुनने के लिए जल्लीकट्टू खेल का सहारा लेती थीं। जल्लीकट्टू खेल का आयोजन स्वयंवर की तरह होता था। जो कोई भी योद्धा बैल पर काबू पाने में सफल हो जाता था, दुल्हन उसे अपने वर के रूप में वरण करती थीं।

जल्लीकट्टू पर पशु कल्याण से संबंधित संगठन और कार्यकर्ता लंबे समय से आपत्ति उठाते रहे हैं। इस खेल के विरोध में दो संगठन, 'पीपल फॉर द एथिकल ट्रीटमेंट ऑफ एनिमल्स' और 'फेडरेशन ऑफ इंडिया एनिमल प्रोटेक्शन एजेंसी', सबसे अधिक मुखर रहे हैं। इन संगठनों में मिलकर वर्ष 2006 में जल्लीकट्टू पर प्रतिबंध लगाने के लिए मद्रास हाई कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। एक लंबी कानूनी लड़ाई के बाद मामला सुप्रीम कोर्ट तक पहुँचा और 6 मई 2014 को देश की शीर्ष अदालत ने जल्लीकट्टू खेल में पशुओं के साथ हिंसक वर्तव मानते हुए खेल पर प्रतिबंध लगा दिया था। इस बीच 2011 में केंद्र सरकार द्वारा भी जल्लीकट्टू के विरोध में एक अधिसूचना जारी की गई थी, परन्तु उस पर राज्य में अमल

नहीं के बराबर हुआ था। हालांकि सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद वर्ष 2015 में पोंगल के अवसर पर जल्लीकट्टू का आयोजन तो नहीं हुआ था, परन्तु इस वर्ष लोग खेल को आयोजित करने को लेकर ज्यादा भावुक हो गए और हिंसा पर उतारू हो गए।

बहरहाल, जल्लीकट्टू के समर्थन में चेन्नई के मरीना बीच पर तमिलनाडु में उठे जनसैलाब के आक्रोश को रोकने के लिए राज्य सरकार ने अध्यादेश जारी कर दिया है और कानून मंत्रालय की सहमति के बाद राष्ट्रपति के पास मंजूरी के लिए भी भेज दिया है। प्रबल संभावना है कि राष्ट्रपति भी इसे मंजूरी दे देंगे परन्तु लोग इस अध्यादेश को मानने को तैयार नहीं हैं। लोगों की मांग इसे पूर्ण कानून का स्वरूप देने की है और यह तभी संभव होगा जब संसद के आगामी सत्र में इसे पारित किया जा सकेगा।

अब यह खेल तमिलनाडु के हर छोटे-छोटे गांव में 14 जनवरी अर्थात् मकर संक्रांति के दिन खेला जाता है। इस खेल का आनंद पूरी तमिलनाडु के लोग उठाते हैं। अब यह खेल दक्षिण भारत के हर गांव और छोटे शहर में भी आयोजित किया जाता है।

पेड्डा ममता राव
सामान्य सहायक
चिकित्सा विभाग

(पृष्ठ 22 के शेषांश)

लोकल ट्रेन एक जीवन तो नहीं पर जीवन के अनेक उपादान जरूर है। जीवन की आपाधापी से एक राहत है ये लोकल ट्रेन, सारा दिन के थके-हारे अपने घर, अपनों के बीच पहुंचाने का माध्यम है ये लोकल ट्रेन, मजा मस्ती, ट्रेन में बने बड़े, छोटे एवं बूढ़े दोस्तों से मिलने का एक ज़रिया है ये लोकल ट्रेन।

धन्यवाद, धन्यवाद, बहुत-बहुत धन्यवाद भारतीय रेल को जिन्होंने हमें लोकल ट्रेन प्रदान किया है। रेणु के शब्दों में कहें तो इसमें धूल, शूल, चंदन, बंदन सबकुछ है यहाँ, किसी से दामन बचा कर नहीं निकल सकते हैं आप।

जिसमें फूल, शूल, धूल और जीवन है। जो निर्जीव होते हुए भी सजीवता से जीवन के साथ चलती चली जाती है। जो है तो लोहे से बनी पर इसमें सजीव दिलों का रोजाना आना जाना लगा रहता है। तो देर किस बात की, आप भी एक बार सवारी कीजिए लोकल ट्रेन की और जमाने के मुंह पर लात मारते हुए लोकल बन जाइए कुछ समय के लिए।

शांतनु नाथ
कनिष्ठ अनुवादक

प्रकृति का महापर्व सरहुल

वैसे तो भारतवर्ष के विभिन्न प्रांतों में भिन्न-भिन्न प्रकार के आदिवासी समुदायों का वास है जिनके सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन तथा रीति-रिवाजों में कतिपय भिन्नताएं हैं परंतु सभी आदिवासी समुदायों में जो एक बात सामान्य है वह है प्रकृति के साथ उनका अनूठा संबंध। इन सभी आदिवासी समुदायों का प्रकृति



के साथ सदैव से एक गहरा संबंध रहा है। परंपरागत रूप से जल, जंगल और जमीन उनके जीवन के अभिन्न अंग रहे हैं। प्रकृति से उनकी आस्था जुड़ी होती है। आदिकाल से ही आदिवासी न सिर्फ प्रकृति पर आश्रित रहे हैं बल्कि निस्वार्थ भाव से उनकी रक्षा भी करते आए हैं। प्रकृति पर उनकी निर्भरता इतनी व्यापक रही है कि उनके जीवन का कोई भी पहलू शायद ही इससे अछूता रहा हो। शादी ब्याह से लेकर सभी प्रकार के सामाजिक समारोहों या धार्मिक अनुष्ठानों में प्रकृति की एक अनूठी भूमिका होती है। उनका संपूर्ण जीवन प्रकृति के तत्वों से इस कदर आच्छादित है कि ये उनकी आस्था का आधार स्तंभ बन गए हैं। अपने जीवन-यापन के लिए कंद-मूल, फल-फूल, साग-सब्जियां, जड़ी-बूटी, लकड़ी आदि संग्रह करने हेतु वे जहां एक ओर प्रकृति पर आश्रित हैं वहीं उनके उपनाम भी प्रकृति में पाए जानेवाले पक्षियों, पेड़-पौधों, फूलों, वन्य एवं जलीय जीवों आदि के नामों से लिए गए हैं। यह प्रकृति के साथ उनके गहरे अंतर्संबंध को रेखांकित करती है।

प्रकृति के साथ उनके सहजीवन का ही परिणाम है कि उनके उत्सवों एवं रीति रिवाजों के मूल में वन्य पेड़

पौधों और पशु-पक्षियों के भाव निहित हैं। झारखंड के आदिवासियों व मूलनिवासियों का एक ऐसा ही महत्वपूर्ण और प्रमुख पर्व है सरहुल जिसे प्रकृति पर्व भी कहा जाता है। जिस प्रकार बिहार में छठ, बंगाल में दुर्गा पूजा, केरल में ओणम, तमिलनाडु में पोंगल या पंजाब में लोहड़ी पर्व की महत्ता है उसी प्रकार झारखण्ड में सरहुल पर्व की अपनी अलग ही महत्ता है। वैसे तो सरहुल पर्व मुख्य रूप से झारखण्ड राज्य में मनाया जाता है लेकिन इसके अलावे मध्य प्रदेश, ओडिशा, पश्चिम बंगाल के आदिवासी बहुल क्षेत्रों में भी इसे बड़े धूम धाम से मनाया जाता है।

प्रकृति पर्व सरहुल वसंत ऋतु में मनाया जाने वाला पर्व है जब पतझड़ के बाद पेड़-पौधे की टहनियों पर हरी-हरी पत्तियां निकलने लगती हैं, आम के मंजर तथा सखुआ और महुआ के फूलों से जब पूरा वातावरण सुगंधित हो उठता है। इस पर्व में **“साल अर्थात सखुआ”** के वृक्ष का विशेष महत्व है और यही कारण है कि इस पर्व में इसकी अहमियत अत्यंत बढ़ जाती है। वास्तव में इस वृक्ष की विशिष्ट गुणवत्ता भी कई मायनों में इसे पूजनीय बनाता है।

वैसे तो कई किस्से कहानियां हैं इस पर्व के नामकरण को लेकर परंतु ये कितने प्रमाणिक हैं यह चर्चा का विषय हो सकता है। सरहुल में दो शब्द हैं ‘सर’ और ‘हुल’ जो स्थानीय भाषा में **सरई** अर्थात **‘सखुआ या साल’** के लिए प्रयुक्त हुए हैं। मुख्यतः यह पर्व फूलों का पर्व है जिसमें सखुआ के फूलों की विशिष्ट प्रधानता है। किंवदंतियां जो भी हों, परंतु आस्था के मूल में जो भावना है वह है प्रकृति के साथ अंतरंग संबंध और प्रकृति के उपदानों के प्रति कृतज्ञता की एक अव्यक्त अभिव्यक्ति।

झारखंड में बोली जानेवाली अलग-अलग जनजातीय भाषाओं में साल, सखुआ, सारजोम, सरई जैसे नामों से जाने और पाए जाने वाले इस वृक्ष का वानस्पतिक नाम शोरिया रोबास्टा है, जो डिष्टरोकरपेसी कुल की एक प्रजाति है (**प्रभात खबर, 24 मार्च**)। इस द्विबीजपत्री अर्धपर्णपाती बहुवर्षीय वृक्ष के गुण एवं लक्षण ही इसे अद्वितीय बनाते हैं। वैसे तो यह भारत के कई प्रदेशों में पाया जाता है परंतु अपनी बहुलता के कारण आदिवासी बहुल प्रदेश झारखंड और छत्तीसगढ़ में इसे राजकीय वृक्ष का सम्मान प्राप्त है।

इस वृक्ष की आयुकाल 100 वर्षों से भी अधिक होती है, इसकी लकड़ी कठोर, भारी और मजबूत होती है जिसकी क्षय होने की गति अत्यंत धीमी होती है। सखुए के लिए स्थानीय कहावत है – **सौ वर्ष खड़ा, सौ वर्ष पड़ा, फिर भी न सड़ा**। इसकी जड़ों की विशिष्टता इसे जंगल में जीवत बनाती है। बीजों से उत्पन्न होने के कई वर्षों तक विभिन्न प्राकृतिक कारणों से पौधे के ऊपरी हिस्से के मृतप्राय हो जाने के बावजूद इनकी जड़ें अपने को विकसित करती रहती हैं और अनुकूल भौगोलिक परिस्थिति पाने पर सखुआ पुनः अपने तने को विकसित कर लेता है।

झारखंड के संदर्भ में सखुए के वृक्ष की अलग ही भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान है। सामाजिक रूप से जीवन की गहराईयों तक रचा-बसा सखुआ आदिवासियों के विवाह संस्कार से लेकर कृषि कार्य और गृह निर्माण के साथ-साथ कई छोटी बड़ी आर्थिक जरूरतों को भी पूरा करती है। विवाह संस्कार संपन्न करने में सखुए के वृक्ष की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। घर के आंगन में सखुआ की डालियों और खंभों से मड़वा (शामियाना) तैयार किया जाता है। मड़वा के बीच में सखुए के पत्तों का ध्वज लगाया जाता है। भोजन और नाश्ता आदि परोसने तथा पानी पीने के लिए सखुए की पत्तियों को सिलकर पत्तल तैयार किए जाते हैं जो प्राकृतिक रूप से अत्यंत स्वास्थ्यकर माने जाते हैं। स्वच्छता के विकल्प स्वरूप सखुए की पत्तियों का काफी उपयोग होता है। काष्ठ की जरूरतों के अलावा इसकी पत्तियों को सी कर भोजन परोसना, खाना लपेटकर भोजन बनाना, रखना आदि शुद्धता और स्वाद के रूप में आदिवासी समाज में चिरकाल से प्रचलित है। सखुए के फूल श्रंगार साधन के रूप में इस्तेमाल किए जाते हैं। इनकी नन्हीं डालियों का

दंत मंजन के रूप में इस्तेमाल होता है जो दांतों के लिए हितकर होता है। सखुए के लकड़ी का उपयोग घरों के फर्नीचरों के अलावे और अन्य निर्माण कार्यों में बहुतायत से होता है। शुरूआती दौर में रेल के पटरियों को बिछाने के लिए बड़े पैमाने पर सखुए के लकड़ियों का उपयोग सर्वविदित है। पुराने समय में खाद्यान संकट से उत्पन्न



विकट परिस्थितियों के दौर में लोगों ने सखुए के बीजों का उपभोग भी किया है। अतः इसे जीवन रक्षक के रूप में भी माना जाता है। तने से रिसनेवाले पदार्थ जिसे राल अथवा धूप कहा जाता है, धूमीकरण के लिए सर्वविदित है, इसका उपयोग कुछ मामलों में औषध के रूप में भी किया जाता है। आदिवासियों के पूर्वजों द्वारा स्थापित सखुए के साथ सहजीवन की भावनात्मक धार्मिक और वैज्ञानिक सोच आज भी कई पूजा स्थलों में संरक्षित उपवन के रूप में देखे जा सकते हैं।

निष्कर्षतः आज के तथाकथित समाज ने ज्ञान के अपने दर्प में आदिवासी समाज के ज्ञान परंपराओं की उपेक्षा की है। आधुनिक विज्ञान ने कई बार उनके ज्ञान को अंधविश्वास कह कर खारिज कर दिया है। आदिवासियों का जीवन प्रकृति के ज्यादा नजदीक होता है। उनके दर्शन में प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर चलने का आदर्श होता है। उन्हें जंगल के पेड़ पौधों और औषधीय गुणों का अदभुत ज्ञान है और उनके अनुभव और सदियों के पारंपारिक ज्ञान संचय का समुचित विकास सभ्य समाज के लिए अवश्य ही लाभकारी और हितकारी हो सकता है।

कीर्ति किरण बागे
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी



इआर्स

इआर्स को दोआर्स भी कहते हैं। इआर्स शब्द अंग्रेजी के डोर शब्द से आया है जिसका अर्थ है दरवाजा। यह भारत के पूर्वी एवं उत्तर पूर्वी तराई से ब्रह्मपुत्र नदी के बेसीन तक इआर्स अंचल कहलाता है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि यह भारत के मुख्य भाग को पूर्वोत्तर भाग, भूटान, सिक्किम और उत्तर बंगाल के दार्जिलिंग से जोड़ता है। अतः कह सकते हैं कि यह उत्तर पूर्व भारत का मुख्य द्वार है।

जलवायु

पूरे वर्ष अपने अच्छे और सुहाने मौसम के रूप में जाने जाने के कारण इस क्षेत्र में किसी भी वक्त जाया जा सकता है। हालांकि जाड़े के मौसम को पर्यटकों के लिए सबसे अच्छा माना जाता है। इस अंचल में करीब 3400 मिलीमीटर वर्षा होती है। कुछ अलग चाहने वाले लोग गर्मियों के दिनों में यहां आना पसंद करते हैं। गर्मियों के दिनों में यहां की जलवायु 30 डिग्री से 32 डिग्री के बीच रहती है। हिमालय से आने वाली बहुत सारी नदियाँ और जल धाराएं इस क्षेत्र से गुजरती हैं जिसके कारण यहां की मिट्टी उर्वर होती है। इसी कारण घने जंगल और चाय के बागानों की बहुतायत है।

प्राकृतिक संसाधन

इस क्षेत्र में ईश्वर के वरदान से प्राकृतिक जंगल, हरियाली से भरे चाय के बगान, हरे- भरे घने जंगलो से भरपूर, छोटी बड़ी नदियों का जाल फैला हुआ है। प्रमुख नदियाँ जैसे तिस्ता, रायडाक, धनसिरी, तोरसा, जलढाका, मुर्ती और कालजयी इत्यादी हैं। संकोष नदी इआर्स को दो हिस्सों में बाँटती है। पूर्वी इआर्स और पश्चिमी इआर्स जो करीब 88000 किलोमीटर स्क्वायर (34000 स्क्वायर माइल) में फैला हुआ है। इआर्स की तुलना उत्तर भारत और नेपाल के तराई भाग से की जा सकती है।

राष्ट्रीय उद्यान

गोरुमारा राष्ट्रीय उद्यान, बक्सा टाइगर रिजर्व, जलदापारा राष्ट्रीय उद्यान, वाइल्ड लाइफ सैंक्चुअरी, नेओरा नेशनल पार्क, राजाभातखावा फोरेस्ट, सिहांलिया नेशनल पार्क, महानन्दा वाइल्ड लाइफ सैंक्चुअरी और चम्पासारी वाइल्ड लाइफ सैंक्चुअरी यहाँ के प्रमुख जंगल हैं जहाँ तरह-तरह के पशु-पक्षी पाये जाते हैं। इस क्षेत्र

पाये जाने वाले प्रमुख भारतीय पशु पक्षियों में जैसे एक सींग वाले राइनो, हाथी, चितल, सांबर, बंगाल बाघ, चीता नीलगाय, मोर, सुनहरी बिल्ली, हार्नविल देखे जा सकते हैं। इसके अलावा हिमालयन तोहर, भुटानी तासकीन एवं हिमालयन गोराल भी यहां पाये जाते हैं।

इसके अलावा यहां के जंगल सफारियों में जीप सफारी, एलिफेन्ट सफारी और भी बहुत सारे आकर्षण की चीजे हैं।

इआर्स में स्थित सामसिंग गांव जो सिलीगुड़ी से 82 किलोमीटर दूर है हरी भरी ऊंचाइयों और तराई से भरी पड़ी है। यहां के नारंगी और इलाइची के बागान काफी प्रसिद्ध हैं। पर्यटकों के लिए रॉक गार्डन भी आकर्षण का स्थान है।

राजनैतिक महत्व

भारत का यह भाग राजनैतिक दृष्टिकोण से काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि नेपाल, बंगलादेश और भूटान जैसे देशों की अन्तर्राष्ट्रीय सीमाएं यहां मिलती हैं जिसके कारण भारतीय सेना के प्रमुख अंग जैसे इंडियन आर्मी, इंडियन एयर फोर्स, बोर्डर सिक्कुरिटी फोर्स एवं केंद्रीय रिजर्व पुलिस फोर्स बड़ी संख्या में यहां तैनात रहती है। इसके अलावा सिक्किम जैसे छोटे लेकिन महत्वपूर्ण राज्य में प्रवेश द्वार यहीं से खुलता है।

अर्थ व्यवस्था

इआर्स की इकोनॉमी में तीन टी काफी महत्वपूर्ण हैं जो हैं टी (चाय), टूरिज्म (पर्यटन) एवं टिम्बर (लकड़ी)। इस क्षेत्र के मुख्य व्यापार में चाय है जिसमें लाखों की संख्या में लोग कल कारखानों एवं बागानों में कार्य करते हैं। पान के पत्तों की खेती एवं व्यापार में भी लोग बड़ी संख्या में लगे हैं।

क्षेत्र के बड़े भूभाग में जंगल और राष्ट्रीय उद्यानों के कारण बड़ी संख्या में पर्यटक भारत एवं विदेशों से साल के ज्यादातर समय में आते रहते हैं। पर्यटकों की इतनी बड़ी संख्या यहां के व्यापार एवं वाणिज्य के साथ-साथ यहां की अर्थव्यवस्था में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है।

दिलीप कुमार दास
वरिष्ठ आशुलिपिक



हमारे जीवन में संगीत

“संगीत ब्रह्मांड को आत्मा देता है, मन को पंख देता है, कल्पना को उड़ान देता है, और जीवन सब कुछ देता है।”

संगीत मानव जीवन के विभिन्न क्षणों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। व्यक्ति के जीवन में खुशियां और आनंद का संचार करता है। संगीत जीवन की आत्मा है और हमें असीम शांति प्रदान करता है। संगीत एक सुखद ध्वनि है जो धुन और सामंजस्य का मेल है और जो हमें सुकून देती है।

संगीत में दैवीय शक्ति होती है। यह मनोरंजन का एक बड़ा स्रोत है। यह लोगों को एक साथ बांधता है। यह अतीत से कई प्यारी यादें वापस लाता है। यह हमें अपने आंतरिक स्व से जुड़ने में मदद करता है और आत्म अभिव्यक्ति के उत्कृष्ट माध्यम के रूप में भी कार्य करता है। संगीत मानव जाति से प्यार करता है और इसकी भलाई के लिए आवश्यक है। संगीत प्राचीन काल से ही मनोरंजन का प्रमुख साधन रहा है। पहले के समय में, जब टीवी, इंटरनेट कनेक्शन, वीडियो गेम या खुद का मनोरंजन करने का कोई अन्य तरीका नहीं था, संगीत ने लोगों को बोरियत से निपटने में मदद की। इससे उन्हें एक-दूसरे से बेहतर तरीके से जुड़ने में भी मदद मिली। लोगों ने लोकगीत गाए और उनकी धुन पर नृत्य किया। संगीत हमारे दिमाग को शांत करता है और हमारे शरीर को आराम देता है। यह कला के सर्वोत्तम रूपों में से एक है। संगीत रचना करना इसे सुनने जितना ही शानदार अनुभव हो सकता है। गायन और भी अधिक प्राणपोषक हो सकता है। संगीत के मौखिक और गैर-मौखिक दोनों रूप हमारी इंद्रियों पर सुखदायक प्रभाव डालते हैं। संगीत के लाभ बेशुमार हैं। यहां इसके कुछ लाभ दिए गए हैं।

दुनिया भर के डॉक्टरों ने विभिन्न चिकित्सा उपचारों के एक भाग के रूप में संगीत चिकित्सा को शामिल करना शुरू कर दिया है क्योंकि यह तेजी से ठीक होने में मदद करता है।

संगीत चिकित्सा के प्रकार

संगीत चिकित्सा को मोटे तौर पर दो श्रेणियों में बांटा गया है। ये इस प्रकार हैं:

1. सक्रिय संगीत चिकित्सा

सक्रिय संगीत चिकित्सा में, प्रतिभागी (चिकित्सा प्राप्त करने वाले) विभिन्न संगीत वाद्ययंत्रों का उपयोग करके संगीत बनाते हैं। वे गीत भी लिखते हैं और गीत गाते हैं। विचार यह है कि रोगी का ध्यान उसकी शारीरिक या मानसिक स्थिति से हटकर किसी सकारात्मक चीज़ की ओर लगाया जाए। संगीत बनाना चिकित्सीय हो सकता है। चूंकि ये सामूहिक गतिविधियां हैं, ये प्रतिभागियों को एक-दूसरे से जुड़ने और नए दोस्त बनाने में मदद करती हैं। यह उपचार प्रक्रिया में भी मदद करता है।

2. ग्रहणशील संगीत चिकित्सा

इस प्रकार के संगीत चिकित्सा सत्र के दौरान, चिकित्सक संगीत वाद्ययंत्र बजाता है और गीत गाता है। प्रतिभागी चुपचाप बैठते हैं और उसे सुनते हैं। कई बार सॉफ्ट हीलिंग म्यूजिक एक रिकॉर्डर पर बजाया जाता है और प्रतिभागी इसका आनंद लेते हैं। इसके बाद अक्सर प्रतिभागियों और चिकित्सक के बीच चर्चा होती है।

संगीत चिकित्सा सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए काम करती है। यह आराम करने, तनाव से लड़ने और विभिन्न बीमारियों से लड़ने का एक प्रभावी तरीका है। यह सभी के लिए अनुशंसित है कि वह किसी बीमारी से पीड़ित है या नहीं। संगीत हमारे दैनिक जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह हमारी भावनाओं और भावनाओं को व्यक्त करने का एक तरीका है। संगीत जीवन से बचने का एक तरीका है, जो हमें दर्द में राहत देता है और दैनिक दिनचर्या के तनाव को कम करने में हमारी मदद करता है। यह हमें शांत करने में मदद करता है, यहां तक कि खुशी के क्षण में भी हमें उत्साहित करता है।

(ईशिता साहा)

वरिष्ठ लिपिक

महाप्रबन्धक कार्यालय

निःस्वार्थ मां

पच्चहत्तर वर्ष की उम्र में कमला के आंखों की रोशनी भी कम हो गई थी। कमला देवी काफी बूढ़ी और कमजोर हो चुकी थी। उन्हें रोजमर्रा की चीजें याद ना रहती थी लेकिन जो उन्हें हमेशा याद रहता वह था उनका बेटा। दिन हो या रात एक पल भी ऐसा ना होता जब उन्हें अपने बेटे की याद ना आती। वे इस



उम्मीद में जिंदा थी कि "मेरा बेटा एक दिन जरूर मुझसे मिलने आएगा"।

बहुत पहले ही कमला देवी के पति की किसी सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी। पेंशन के सहारे अपना और अपने बेटे का गुजर-बसर किया। बेटा पढ़ाई-लिखाई में बहुत ही होनहार था। छोटी उम्र में ही पिताजी की मृत्यु से उनके ऊपर पढ़ाई के साथ-साथ बहुत बड़ी जिम्मेदारी आ गई उसे अब सब कुछ खुद करना था। छोटी सी उम्र में ही लड़के ने सोच लिया था कि मुझे मां और अपने खातिर कुछ ऐसा करना है जिससे परिवार की स्थिति सुधरे। परिवार में सगे-संबंधी भी थे किन्तु पिताजी के गुजर जाने के बाद सब ने मुंह मोड़ लिया।

बहुत कम उम्र में पढ़ाई करते-करते किसी कम्पनी में नौकरी कर ली क्योंकि नौकरी की बहुत जरूरत थी। इसी दौरान काम करते-करते विदेशी कम्पनी से उसे बड़ा ऑफर आया और वह विदेश चला गया। कुछ ही दिनों बाद शादी-विवाह करके परिवार सहित वहीं बस गया और अपनी मां को आया (काम करने वाली) के साथ छोड़ दिया। शुरू-शुरू में उनका बेटा राजबीर सिंह रोज सुबह-शाम फोन करता था कि मां कैसी है ? धीरे-धीरे राजबीर सिंह भी अपने पारिवारिक जीवन में व्यस्त हो गया और उनको संतान भी प्राप्त हुआ। अपनी बूढ़ी मां को फोन करना भी कम कर दिया।

लेकिन कमला देवी का बेटा साल भर में कभी-कभी अपने मां को फोन कर लिया करता और एक-दो मिनट से ज्यादा बातें भी नहीं करता था। फिर भी यह बूढ़ी मां टकटकी लगाए अपने बेटे का इंतजार करती रहती। एक दिन बेटे का विदेश से फोन आया।, "हेलो, हेलो सुन रही हो ना मां? राजबीर सिंह बोल रहा हूँ तुम्हारा बेटा। कैसी हो मां?" "मैं.. मैं.. ठीक हूँ बेटा तुम बहू और मेरा पोता कैसा है?" मां ने पूछा।

सब अच्छे हैं मां। मैं अगले महीने गांव आ रहा हूँ मां, तुम्हें लेने। हम सब मिलकर साथ में लंदन में रहेंगे मां। तुम्हारी बहू कह रही थी, मां को यहां पर लेकर आओ बेचारी अकेली वहां रहती है - बेटे ने कहा।

मां की बूढ़ी, सूखी आंखें आंसुओं से भीग गई। उसके कमजोर शरीर के नस-नस में खुशी की लहर दौड़ गई। बेटे और बहू का अपने प्रति प्रेम देखकर मां का मन खुशी से भर आया।

बेटे ने आगे कहा - मां तैयार रहना। मुझे ज्यादा दिन भी छुट्टियां नहीं है। जिस जिस से जितने पैसे लेने हैं लेकर रखना तब तक मैं प्रॉपर्टी डीलर से बात कर

लेता हूँ, घर के लिए।

“घर के लिए?” मां ने पूछा। “हां मां, गांव का घर हमें बेच देना पड़ेगा। अब हम साथ में ही रहने वाले हैं तो वहां पर घर रखने का कोई मतलब नहीं है मां” बेटे ने कहा।

बुढ़ापे की वजह से ठीक से चलने में अक्षम मां ने पूरे मोहल्ले में घूम-घूम कर अपनी इस खुशखबरी को सबको सुनाया। सभी को खुशी हुई सबको लगा मांजी के आखरी दिन अपने परिवार के साथ खुशी से बीत जाएंगे।

वह भी बुढ़ापे के आखरी सांस बेटे और बहू के साथ बिताना चाहती थी। इसी कारण दिल पर पत्थर रखकर घर बेचने के लिए मां तैयार हो गई।

आनन-फानन में बेटे ने घर को आधे दामों पर बेच दिया। मां ने ज्यादा नहीं लेकिन जिन चीजों को दिल से लगा रखा था उन चीजों को समेटा और बेटे के साथ टैक्सी में बैठकर एयरपोर्ट के लिए चली गई।

एयरपोर्ट पर आकर बेटे ने मां से कहा - मां तुम यहां बेंच पर बैठो मैं सामान और बोर्डिंग पास की जांच करा कर आता हू। वहां समय लगता है और खड़ा रहना पड़ता है। तुम्हें तकलीफ होगी। तुम यही आराम करो मैं यूँ गया और यूँ आया।

मां बेंच पर बैठ गई और बेटा अंदर चला गया। काफी समय हो गया। बेटा वापस नहीं लौटा। मां सोचने लगी, ज्यादा भीड़ होगी इसलिए देर लग रही होगी। रात होने लगी। अब तो लोगों की चहलकदमी भी कम होने लगी। मां को अब चिंता होने लगी। एक कर्मचारी ने आकर पूछा - कहां जाना है मांजी आपको? यहां पर क्यों बैठी हैं?

डरती हुई आवाज में कमला देवी बोली, “मेरा बेटा अंदर सामान की जांच कराने गया है। लंदन जा रहे हैं हम।”

कर्मचारी ने पूछा - क्या नाम है मां जी आपके बेटे का

? कमला देवी ने बताया - राजबीर सिंह नाम है मेरे बेटे का।

कर्मचारी अंदर गया और थोड़ी देर बाद बाहर लौटा। उसने कमला देवी से कहा, मांजी लंदन जाने वाली फ्लाइट तो दोपहर में ही जा चुकी है और आपका बेटा भी उस फ्लाइट में बैठकर लंदन जा चुका है। अब आपके यहां बैठने का कोई मतलब नहीं है। आप भी अपने घर चली जाइए।

“क्या जा चुका है? और मैं घर जाऊँ? घर?” मां की आंखों से आंसुओं के सैलाब उठने लगे।

जैसे तैसे मां घर पहुंची जो अब उसका था ही नहीं, बिक चुका था। वो वही बरामदे के पास सो गई। घर के नए मालिक को उस पर दया आई तो एक कमरा किराए में उसको दे दिया। पेंशन के पैसों से खाना और किराए का बंदोबस्त हो जाता था। दिन बीतने लगे।

कुछ दिनों बाद घर के नए मालिक ने कमला देवी से कहा - मांजी आप अपने रिश्तेदारों के यहां जाकर क्यों नहीं रहती हैं? इस उम्र में आपके लिए वही अच्छा होगा।

अच्छा तो होगा लेकिन अगर मेरा बेटा वापस आया तो उसका ख्याल कौन रखेगा? मेरा बेटा बहुत भोला है उसे अपना ख्याल रखना बिल्कुल नहीं आता! मैं कहीं नहीं जाऊंगी! क्या पता कब उसे मेरी जरूरत पड़ जाए। मां ने कहा।

मां अपने बेटे का इंतजार करती रही। अंत में बुढ़ी मां की मृत्यु हो गई। फिर भी उसका बेटा वापस नहीं लौटा।

किसी ने सच ही कहा है पूत कपूत हो सकता है लेकिन माता कभी कुमाता नहीं होती।

मानसिंह मेलगन्डी
निजी सचिव-।।

ज्योतिषी जाल

वर्तमान समय में एवं ज्योतिषियों का समाज में अधिक बोल बाला है। मनुष्य हर संभव कार्य ज्योतिषियों से पूछे बिना नहीं करता। जन्म से लेकर विवाह तक, फिर विवाह से लेकर बुढ़ापे तक, फिर बुढ़ापे से लेकर मृत्यु तक अपने हर सिद्धांत पर मनुष्य ज्योतिषी पर निर्भर रहता है। बच्चे के जन्म के साथ ही साथ एक



कुंडली बन जाती है, वह भविष्य में नासा जाएगा या नशा करेगा उसका एक छोटा सा विवरण ज्योतिषी यजमान के

समक्ष प्रस्तुत करता है। जीवन की हर मुश्किलों के लिए व्यक्ति ज्योतिषी के पास दौड़ता है।

ज्योतिष हमारे भारतवर्ष का अमोघ ज्ञान है। ज्योतिष और इसके सूत्र अपने आप में अनमोल है। इसमें ऋषि परासर, ऋषि भृगु और भी अनेक प्राचीन ऋषियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस विषय को आज वैज्ञानिक विज्ञान से जोड़ते हैं।

कहते हैं आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है। वर्तमान में किसी के भाग्य को जानने के लिए लंबा हिसाब किताब करने की आवश्यकता नहीं होती है। बाज़ार में बहुत सारे सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं। आप बस अपना जन्म तारीख, महीना, साल, जन्म समय और स्थान उस सॉफ्टवेयर में डाल दीजिये आपका भविष्य आपके मोबाइल स्क्रीन पर आ जाएगा।

हर विद्या या हुनर सीखना अपने आप में एक तपस्या होती है। अभी के अनुसार भाड़ में जाए तपस्या। वर्तमान में हर चीज का एक क्रैश कोर्स होता है, हरिशंकर परसाई ने सही कहा था कि “आजकल हिंदी में ही इतने डॉक्टर हो गए हैं कि गली में एक ईंट उछालो तो वह एक डॉक्टर के सिर पर जा लगती है।” वही हाल है ज्योतिषियों का। वर्तमान समय में हर गली नुक्कड़ में आपको

रेडीमेड ज्योतिषी मिल जाएंगे। एक अति कमाऊ ज्योतिषी बनने के लिए बस पाँच बातें महत्वपूर्ण हैं- सबसे पहले आपको एक क्रैश कोर्स करनी पड़ेगी, दूसरा आपके नाम के आगे शास्त्री या आचार्या जैसा परीक्षानुसार आपको उपाधि मिली हो, लगा लेना पड़ेगा, तीसरा आपके पास एक लैपटॉप और ज्योतिष संबंधी सॉफ्टवेयर होना चाहिए एवं अंतिम और चौथा आपके पास वाक पटुता की अद्भुत क्षमता होनी चाहिए। बस, वल्ले-वल्ले आप बन गए ज्योतिषी।

अब आता है मार्केटिंग, हाँ सही पकड़े है। अब यह विद्या लोक सेवा तक सीमित नहीं है बल्कि यूं कहें की निज-निज की सेवा तक इसका विस्तार हो चुका है। मीडिया के किसी रूप का हाथ पकड़कर आपको लोगों को यह बताना होगा की आप एक महान ज्योतिषी है। आपने लाखों लोगों की कुंडली बनाई है। आपने सबके जीवन पथ को अग्निपथ से आनंद पथ की ओर मोड़ दिया है। इसी के साथ-साथ आपको कुछ ऐसे फिल्मी कलाकारों के नाम भी अपने नाम के साथ जोड़ देना होगा जिन्होंने आपसे ज्योतिष संबंधी सलाह ली और निहाल हो गए हैं। हाँ, याद रहे जैसे एप्रोन और

स्टैथोस्कोप एक डॉक्टर की पहचान होती है वैसे ही ज्योतिषी बनने के लिए आपको सिर पर एक तिलक, गले में बेफिजूल कुछ पत्थरों की मालाएँ और एक भगवा पहनावा धारण



करना पड़ेगा। अब आप एक पर्फेक्ट ज्योतिषी बन गए। अब एक डेरा लगाइए और लोगों की कुंडलियाँ बनाइए।

मुख्यतः ज्योतिष एक रोचक विषय है। हर व्यक्ति आदत से मजबूर अपने भूत-भविष्य को जानना चाहता है। वह क्या था

और क्या उसे होना है, यह जानने के लिए वह सदा उत्सुक रहता है। जो है वो ठीक है, जो होगा वो अच्छा होगा से विपरीत, जो है वो बदतर है एवं जो होगा उसे उज्ज्वल बनाने के पीछे मनुष्य दौड़ता है। इसी आपाधापी का फायदा वर्तमान के कुछ भंड ज्योतिषी उठाते हैं। ज्योतिषियों ने मिलकर ज्योतिष को एक व्यवसाय



करने का मार्ग बना लिया है। लोगों को ग्रहों, ज्योतिषीय योगों, प्रतिकारों, पूजा पाठ एवं कर्म क्रिया के नाम पर डरा कर पैसे लिए जाते हैं। इसी के छद्म में

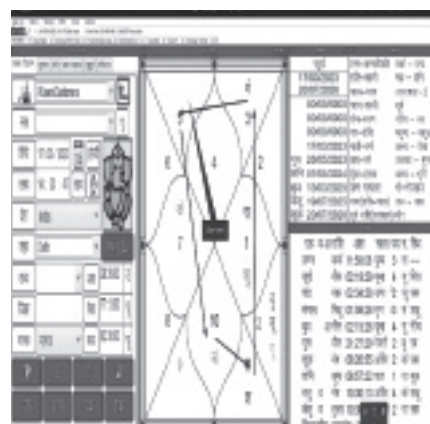
और भी बहुत कुछ किया जाता है। आज के समय में हर एक ज्योतिषी एक तांत्रिक है। वह या तो कामाख्या से या नहीं तो तारापीठ से सिद्धि प्राप्त करके लौटा है। तंत्र उनके लिए एक खेल मात्र है। वशीकरण, उच्चाटन जैसी क्रियाएं भी एक घंटे में ही कर देने का दावा वे अपने विज्ञापनों में डाल देते हैं।

अब सिलसिला शुरू होता है डराने का- मान लेते हैं कि आपकी बेटी का रिश्ता तय नहीं हो पा रहा है। आप चिंतित और संकित मन लेकर किसी ज्योतिषी की शरण में जाते हैं। वह आपकी बेटी की कुंडली बनाता है और सूर्य, मंगल, गुरु, शनि या राहू को टारगेट करके आपको भविष्य फल बता देता है। बेटी का मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और द्वादश में होने के कारण आपकी बेटी मंगली है। आपकी बेटी की कुंडली में गुरु चांडाल, केंद्रुम योग, कालसर्प योग, विधवा योग आदि, आदि है। आप तो पहले से ही डरे हुए थे अब आपको और डराया गया। एक सुयोग्य डॉक्टर की तरह आपको रोग बताया जाएगा। अब आपका प्रेस्क्रिप्शन तैयार किया जाएगा। सभी ग्रह के लिए अलग-अलग रत्न एवं पूजा-पाठ आपको प्रेस्क्राइब किया जाएगा। आपके मन में जम कर डर घुसाया जाएगा। डर क्या-क्या नहीं करवाता है। आप अपनी बेटी की भलाई के लिए हर संभव प्रयास करेंगे और जो आपको प्रेस्क्राइब किया गया है सब कुछ आप

खरीद लेंगे एवं उनपर अमल करेंगे। अब यहाँ दो बातें होंगी- एक तो इन सबके सहारे आपकी बेटी की शादी हो जाएगी या नहीं होगी। हुई तो ठीक है, नहीं हुई तो आप फिर उस ज्योतिषी के पास जाइएगा। फिर से उसका फीस भरिएगा। वह फिर आपको नया कुछ समझाकर फिर कुछ दवाई बदल कर अर्थात् कुछ नया पूजा पाठ या अन्य प्रकार का कुछ साधन बताकर आपको लौटा देगा और यदि शादी हो गई तो आप और दो लोगों को जो आपके तरह ही रोगी है, उनके पास उनका रोग ठीक करने के लिए भेजिएगा। यह सिलसिला चलता रहेगा, वे डराकर ठगते रहेंगे और हम ठगाते जाएंगे।

आज के समय में ज्योतिष और ज्योतिषी एक छलावा मात्र बन कर रह गए हैं। हम अपने प्राचीन धरोहर को भूलते और नष्ट करते जा रहे हैं। हमारे पूर्वजों ने सूर्य चंद्रमा का अंश बल, नक्षत्रों की गति, ग्रहों की चाल आदि को देखकर एवं गहन अध्यन व मनन कर जिस ज्ञान को अर्जित किया था वह अब सहज लभ्य होते-होते बाजारू हो गया है।

हमारे कर्म ही हमारे भविष्य का निर्माण करते हैं। हमारा खुद के प्रति विश्वास, अपने पूज्य पर हमारी आस्था यही हमारी शक्ति है। जैसा कर्म वैसा फल, यही जीवन है। ज्योतिष एक वृहत ज्ञान है। इसे सीखना, इसका गहन अध्ययन करना, इसपर मनन करना यही किसी भी ज्योतिषी का धेय होना चाहिए। ज्योतिषी एक निरपेक्ष सत्ता है। उसे ज्योतिष मानव कल्याण के लिए सिखाया गया है। वह सत्य का वर्णन करेगा। गलत को सही नहीं बल्कि जो होगा उसे सत्य के रूप में वयां करेगा। एक ज्योतिषी को सिर्फ पैसे कमाने के लिए नहीं बनना है बल्कि उसे ज्योतिष धर्म का पालन करते हुए ज्योतिषी बनना है।



प्रियतोष मुखर्जी
वाणिज्य पोर्टर

कोलकाता मेट्रो रेलकर्मियों ने देश का नाम रौशन किया

24 सदस्यीय भारतीय टीम ने जिसमें मेट्रो के श्री सुमित मुखर्जी भी शामिल थे, लाहौर में हाल ही में संपन्न ब्रिज फेडरेशन ऑफ एशिया एंड मिडल-ईस्ट चैंपियनशिप (बीएफएएमई) में 4 स्वर्ण पदक जीतकर देश का नाम रौशन किया। श्री सुमित मुखर्जी भारतीय टीम में एकमात्र रेलकर्मियों थे। श्री मुखर्जी ने ओपन श्रेणी में भारत का प्रतिनिधित्व किया। श्री मुखर्जी को बधाई देते हुए मेट्रो रेलवे के महाप्रबंधक श्री पी उदय कुमार रेड्डी ने आगामी टूर्नामेंटों के लिए उन्हें शुभकामनाएं दी।



मेट्रो रेलवे में क्षेत्रीय रेल हिंदी निबंध, टिप्पण-प्रारूप लेखन एवं वाक प्रतियोगिता का आयोजन

रेलवे बोर्ड के निर्देशों के अनुरूप मेट्रो रेलवे में दिनांक 30.05.2023 से 31.05.2023 तक क्षेत्रीय रेल हिंदी निबंध, टिप्पण-प्रारूप लेखन एवं वाक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त करनेवाले प्रतिभागी रेलवे बोर्ड स्तर पर आयोजित होनेवाले अखिल रेल हिंदी निबंध, टिप्पण-प्रारूप लेखन एवं वाक प्रतियोगिता में मेट्रो रेलवे का प्रतिनिधित्व करेंगे।

पूर्व-पश्चिम मेट्रो में सौर ऊर्जा पर अधिकाधिक निर्भरता पर जोर

वैकल्पिक स्रोतों से बिजली उत्पन्न कर कार्बन फुटप्रिंट को कम करने की दिशा में मेट्रो रेलवे निरंतर प्रयासरत है। सेंट्रल पार्क डिपो वर्कशॉप के 16000 वर्ग मीटर क्षेत्र और ईटीयू के 3173 वर्ग मीटर क्षेत्र में पहले ही रूफटॉप सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किए जा चुके हैं। ये संयंत्र प्रति वर्ष 1.24 मेगावॉट बिजली उत्पन्न करते हैं जिससे इस मद में 48 लाख (लगभग) रुपयों की बचत होती है।

इसके अतिरिक्त ईस्ट-वेस्ट मेट्रो के दो स्टेशनों अर्थात् सॉल्ट लेक सेक्टर V और सेंट्रल पार्क की छतों पर भी 0.28 MWp रूफटॉप सोलर पावर प्लांट लगाए गए हैं। ये पर्यावरण अनुकूल सौर ऊर्जा संयंत्र 3566.34 वर्ग मीटर क्षेत्र में फैले हुए हैं। इसके परिणाम स्वरूप मेट्रो रेलवे प्रति वर्ष 14.50 लाख (लगभग) रुपये की बचत करने में सक्षम हुआ है।

ब्लू लाइन में आग बुझाने का मॉक ड्रिल

यात्रियों की सुरक्षा और संरक्षा सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न मेट्रो स्टेशनों पर, सुरंगों के अंदर, वायडक्ट पर, रेक के अंदर नियमित रूप से अग्निशमन का मॉक ड्रिल आयोजित किया जाता है। इसी क्रम में 26.02.2023 को सुबह ब्लू लाइन के बेलगछिया और श्यामबाजार मेट्रो स्टेशनों के बीच यात्री निकासी का मॉक ड्रिल का आयोजित किया गया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक एवं हिंदी साहित्यकारों की जयंती

मेट्रो रेलवे राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक 17.02.2023 को अपर महाप्रबंधक श्री एच.एन.जायसवाल की अध्यक्षता में मेट्रो भवन स्थित सभागार में संपन्न हुई। बैठक के प्रारंभ में अपर महाप्रबंधक, नवनियुक्त मुख्य



राजभाषा अधिकारी श्री सतीश कुमार, पूर्व मुराधि श्री राजेश कुमार एवं समिति के सभी सदस्यों का औपचारिक स्वागत किया गया। इस अवसर पर हिन्दी साहित्य जगत के गौरवपूर्ण विरासत के कुछ नामचीन साहित्यकारों नामतः महाश्वेता देवी, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और लाला लाजपत राय की जयंती भी मनाई गई। श्री राजेश कुमार, प्रधान मुख्य संरक्षा अधिकारी एवं पूर्व मुख्य राजभाषा अधिकारी तथा राजभाषा अधिकारी श्रीमती किरण बोस द्वारा उक्त साहित्यकारों के साहित्यिक योगदान पर संक्षिप्त प्रस्तुति दी गई। मौके पर उपरोक्त साहित्यकारों के जीवन एवं उनकी रचनाओं पर आधारित प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का आयोजन किया गया जो काफी रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक रहा।



राजभाषा तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन

फरवरी, 2023 में 'बचत एवं निवेश' विषय पर राजभाषा तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के मुख्य



वक्ता के रूप में अपर महाप्रबंधक सह प्रधान मुख्य इंजीनियर श्री एच.एन.जायसवाल ने पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से प्रस्तुति देते हुए 'बचत एवं निवेश' से जुड़ी कई महत्वपूर्ण आर्थिक जानकारी साझा की। उन्होंने निवेश के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए इसके विभिन्न विकल्पों जैसे म्यूचुअल फंड, इक्विटी, पीपीएफ आदि में निवेश करने के लाभ एवं जोखिम पर विस्तृत चर्चा की जो श्रोताओं के लिए काफी ज्ञानवर्द्धक रही।

मेट्रो रेलवे में अधिकारियों के लिए स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन

तपन सिन्हा मेमोरियल अस्पताल में 18.02.2023 को चिकित्सा विभाग द्वारा मेट्रो रेलवे के अधिकारियों के लिए एक स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया ताकि सभी अधिकारियों को शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ बनाए रखने में मदद मिल सके। जांच शिविर में ब्लड प्रेशर, ब्लड शुगर, बॉडी मास इंडेक्स, लिवर की



कार्यप्रणाली, आंख और हृदय की स्थिति आदि जैसे विभिन्न महत्वपूर्ण स्वास्थ्य पहलुओं की जांच की गई।

मेट्रो रेलवे में रवींद्र जयंती मनायी गई

09.05.2023 को मेट्रो रेलवे के रवींद्र सदन मेट्रो स्टेशन पर कवि गुरु रवींद्र नाथ टैगोर की जयंती धूमधाम से मनाई गई। स्टेशन कर्मियों एवं मेट्रो यात्रियों ने इस महान साहित्यकार के भित्ति चित्र पर माल्यार्पण कर उनके प्रति अपना श्रद्धा सम्मान प्रकट किया।

मेट्रो रेलवे में वृहत पदोन्नति समारोह (मेगा प्रमोशन सेरेमनी)



महाप्रबंधक, मेट्रो रेलवे, श्री पी.उदय कुमार रेड्डी के सक्षम मार्गदर्शन और नेतृत्व में 25.04.2023 को नोआपाड़ा कारशेड में एक बड़े स्तर पर पदोन्नति समारोह का आयोजन किया गया। मेट्रो रेलवे में अपनी तरह का यह पहला और नवीनतम पहल था। कार्यक्रम के दौरान महाप्रबंधक द्वारा कुल 140 ग्रेड-सी कर्मचारियों को उनके पदोन्नति आदेश सौंपे गए। महाप्रबंधक महोदय ने इस अवसर पर उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि यह समारोह सभी मेट्रो कर्मियों को संगठन की बेहतरी के साथ-साथ मेट्रो यात्रियों को बेहतर सेवा प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित करेगा। उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह समारोह मेट्रो कर्मियों के करियर में मील का पत्थर साबित होगा और मेट्रो सेवाओं को और बेहतर बनाने का मार्ग प्रशस्त करेगा।



अंतर मंडलीय अधिकारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम

मेट्रो रेलवे के महाप्रबंधक श्री पी. उदय कुमार रेड्डी ने मेट्रो रेलवे स्पोर्ट्स एसोसिएशन (MRSA), मेट्रो रेलवे कल्चरल



एसोसिएशन तथा ईस्टर्न रेलवे स्पोर्ट्स एसोसिएशन (ERSA) एवं ईस्टर्न रेलवे कल्चरल एसोसिएशन द्वारा 06.04.2023 को बेल्वेडियर पार्क क्लब में संयुक्त रूप से आयोजित दूसरी इंटर डिविजनल ऑफिसर्स स्पोर्ट्स एंड कल्चरल मीट का मशाल जलाकर उद्घाटन किया।

अंतराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

08.03.2023 को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर मेट्रो रेल भवन में एक परस्पर संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में शामिल प्रतिभागियों



ने महिला सशक्तिकरण और उनके दैनिक जीवन में मौजूद चुनौतियों एवं लैंगिक समानता पर अपने विचार साझा किए। श्रीमती चंद्रिमा रॉय, प्रधान मुख्य परिचालन प्रबंधक, श्रीमती संहिता सोरेन, प्रधान मुख्य सामग्री प्रबंधक सहित मेट्रो रेलवे के अन्य महिला अधिकारी एवं कर्मचारीगण इस कार्यक्रम में शामिल अपने विचार साझा किए।

मेट्रो रेलवे ने 2022-23 में गैर-किराया राजस्व मद में 36.33 करोड़ रुपये की रिकार्ड आय दर्ज की

मेट्रो रेलवे ने हाल के दिनों में अपनी गैर-किराया राजस्व आय बढ़ाने के लिए कई अभिनव कदम उठाए हैं। इन पहलों ने मेट्रो रेलवे की गैर-किराया राजस्व आय को काफी हद तक बढ़ाने में मदद की है। इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि मेट्रो रेलवे ने वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान केवल 40 स्टेशनों के साथ गैर-किराया राजस्व आय में सभी क्षेत्रीय रेलवे में 5वां स्थान प्राप्त किया है। वित्तीय वर्ष 2022-23 में मेट्रो रेलवे की गैर-किराया राजस्व आय 36.33 करोड़ रुपये रही है, जो कि 2021-22 में 19.45 करोड़ रुपये की कमाई से लगभग 86.80% अधिक है। मेट्रो रेलवे ने अकेले मार्च 2023 के महीने में 6.87 करोड़ रुपये की कमाई की है, जो मेट्रो के इतिहास में एक कैलेंडर महीने में अब तक की सबसे ज्यादा गैर-किराया राजस्व आय है।

श्री पी. उदय कुमार रेड्डी, महाप्रबंधक ने सुश्री चंद्रिमा रॉय, प्रधान मुख्य परिचालन प्रबंधक और उनकी टीम को इस शानदार उपलब्धि के लिए बधाई दी है।

वित्तीय वर्ष 2022-2023 में मेट्रो रेलवे की स्क्रेप बिक्री रेलवे बोर्ड द्वारा निर्धारित लक्ष्य से अधिक

वित्तीय वर्ष 2022-2023 में मेट्रो रेलवे ने स्क्रेप बिक्री के मद में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। मेट्रो रेलवे ने रेलवे बोर्ड के 10 करोड़ रुपये के निर्धारित लक्ष्य के मुकाबले 2022-23 के दौरान 10.12 करोड़ रुपये अर्जित किए।

मोबाइल फोन की बरामदगी:- 06.03.2023 को महात्मा गांधी रोड स्टेशन पर रेलवे सुरक्षा बल कर्मचारी को प्लेटफॉर्म पर एक मोबाइल फोन मिला। बाद में इसका दावेदार उपस्थित हुआ जिसे उचित सत्यापन करने के बाद फोन सौंप दिया गया।

महिला यात्री को सहायता:- दिनांक 13.02.2023 को एक महिला यात्री शहीद खुदीराम मेट्रो स्टेशन पर अचानक अस्वस्थ महसूस करने लगी। कार्यरत मेट्रो कर्मी उसे स्टेशन मास्टर कार्यालय ले आए और उन्हें तुरंत प्राथमिक उपचार प्रदान किया गया।

बीमार यात्री की सहायता:- 30.01.2023 को दक्षिणेश्वर स्टेशन पर लगभग 52 वर्ष की आयु के एक यात्री को अस्वस्थ पाया गया। उनका प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें आगे के इलाज के लिए सागर दत्ता अस्पताल पहुंचाया।

हिन्दी के हस्ताक्षर

सूरदास भक्तिकाल के कृष्ण भक्ति धारा के प्रमुख कवि भक्त शिरोमणि हैं। उन्होंने कृष्ण की बाल लीलाओं को अपने पदों तथा गीतों के माध्यम से जन-जन के कंठ का कंठहार बना दिया। सूरदास का काव्य भारतीय परंपरा और जीवन सौन्दर्य के मूल क्षेत्र गृहस्थ और परिवार की गहरी संवेदना से जुड़ा हुआ है। सूरदास ने मुख्यतः विनय और लीला के पद रचे हैं। प्रेम और भक्ति का ऐसा ताना-बाना सूर रचते हैं जिसके समक्ष स्वर्ग की निधि भी फीकी पड़ जाती है।

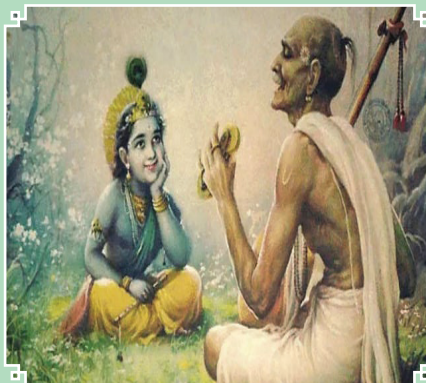
ये माना जाता है कि सूर को माँ का हृदय प्राप्त था तभी तो अंधे होने के बावजूद उन्होंने वात्सल्य के ऐसे अनूठे चित्र खींचे हैं कि उन्हें देख पढ़ कर दांतों तले अंगुली दबानी पड़ती है।

सोभित कर नवनीत लिए।
घुटुरुनि चलत रेनु तन मंडित मुख दधि लेप किए॥
चारु कपोल लोल लोचन गोरोचन तिलक दिए।
लट लटकनि मनु मत मधुप गन मादक मधुहिं पिए॥
कठुला कंठ वज्र केहरि नख राजत रुचिर हिए।
धन्य सूर एकौ पल इहिं सुख का सत कल्प किए॥

शृंगार के संयोग और वियोग दोनों ही पक्षों के विविध चित्र सूर की कविता की समृद्धि को दर्शाते हैं। उनका विरह वर्णन तो हिंदी साहित्य में नहीं अपितु विश्व साहित्य में भी बेजोड़ माना जाता है।

उधो, मन न भए दस बीस।
एक हुतो सो गयौ स्याम संग, को अवराधै ईस॥
सिथिल भई सबहीं माधौ बिनु जथा देह बिनु सीस।
स्वासा अटकिरही आसा लागि, जीवहिं कोटि बरीस॥
तुम तौ सखा स्यामसुन्दर के, सकल जोग के ईस।

सूरदास कृष्ण भक्त एवं महान कवि



जन्म 1478 ई.
समय काल सगुण भक्ति शाखा के मूर्धन्य भक्त कवि
रचनाएं सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य-लहरी
मृत्यु 1583 ई. (गोवर्धन के निकट स्थित पारसौली ग्राम)

वात्सल्य के साथ-साथ शृंगार पर भी सूर का एकाधिकार है। अपने प्रणय चित्रण में सूर ने जीवन के सहज उल्लास और यौवन के सहज आवेग की नितांत वर्जनाहीन अभिव्यक्ति दी है।

खेलौ जाइ स्याम संग राधा।
यह सुनि कुंवरि हरष मन कीन्हों मिटि गई अंतरबाधा॥
जननी निरखि चकित रहि ठाढ़ी दंपति रूप अगाधा॥
देखति भाव दुहुनि को सोई जो चित करि अवराधा॥
संग खेलत दोउ झगरन लागे सोभा बढ़ी अगाधा॥
मनहुं तड़ित घन इंद्रु तरनि है बाल करत रस साधा॥
निरखत बिधि भ्रमि भूलि पर्यौ तब मन मन करत समाधा॥
सूरदास प्रभु और रच्यो बिधि सोच भयो तन दाधा॥

सूरदास अपने पदों में सामंती प्रेम से इतर बात करते हैं। सूरदास के काव्य में प्रेम सिर्फ स्त्री पुरुष का ही नहीं, माँ बेटे के बीच भी एक स्नेह एवं प्रेम का रिश्ता हो सकता है। इसका चित्र भी हमें उनके पदों में मिलता है जो इसके पहले विरल ही था।

संदेसो देवकी सों कहियौ।
हौं तौ धाय तिहारे सुत की, मया करति नित रहियौ॥
जदापि देव जानति तुम उनकी, तरु मोहिं कहि आवे।
प्रातहिं उठत तुम्हारे कान्हि माखन-रोटी भावै॥
तेल उबटनों अरु तातो जल देखत हीं भजि जाते।
जोड़-जोड़ मांगत सोइ-सोइ देती, क्रम-क्रम करिकैं न्हाते॥

भक्ति काल के कवि सूरदास की भक्ति एकांगी नहीं है बल्कि इनकी भक्ति लोक समाज को चेताने और जगाने के महत्त कार्य में अपनी भूमिका का निर्वाह भी करती रहती है।

मो सम कौन कुटिल खल कामी।
जेहिं तनु दियौ ताहिं बिसरायौ, ऐसौ नोनहरामी॥
भरि भरि उदर विषय कों धावौ, जैसे सूकर ग्रामी॥
हरिजन छांड़ि हरी-विमुखन की निसदिन करत गुलामी॥
पापी कौन बड़ो है मोतें, सब पतितन में नामी॥
सूर, पतित कों ठौर कहाँ है, सुनि श्रीपति स्वामी॥



निशांत मेलगंडी
पुत्र - मानसिंह मेलगंडी

प्रियंका कनोजिया
पुत्री - शिवलाल कनोजिया



मेट्रो चेतना

महाप्रबंधक का निरीक्षण



06.05.2023 को जिमखाना का निरीक्षण



03.05.2023 को पूर्व-पश्चिम मेट्रो गलियारे के बहुबाजार एवं एयरपोर्ट मेट्रो का निरीक्षण



21.04.2023 को महानायक उत्तम कुमार स्टेशन एवं टैलीगंज कारशोड का निरीक्षण



04.04.2023 को पर्पल लाइन के जोका तारातला खंड का निरीक्षण

11.04.2023 से 15.04.2023 तक रेडिका, कपूरथला में आयोजित अखिल रेल हिन्दी नाट्योत्सव में मेट्रो रेलवे द्वारा प्रस्तुत एकाँकी 'दयशंकर की डायरी' की झलकियां



30.06.2023 को हिंदी निबंध तथा टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता

